ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 4 अंक : 6 अगस्त-सितम्बर 2014 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

नवरात्र के नौ दिन ही क्यों?	डा. महेश पारासर	2
आपके लिये कैसा रहेगा		
गुरू का कर्क राशि में प्रवेश	डा. रचना के भारद्वाज	4
शत्रु बाधा निवारण हेतु		
बगलामुखी साधना	डा. शोनू मेहरोत्रा	5
मर्यादित होगी दयालबाग में जनकपुरी		6
पुत्रदा एवं अजा एकादशी व्रत	प. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी	7
कैसे लगेगा बच्चों का		
पढ़ाई में मन	पवन कुमार मेहरोत्रा	8
ज्योतिष की वास्तविकता	डा. अरविन्द मिश्र	9
शनि दोष निवारण के टोटके	पं. अजय दत्ता	10
प्राण मुद्रा	विष्णु पाराशर	10
नेतृत्व में दक्षता प्राप्त करें	सुरेश अग्रवाल	11
नजर दोष एंव उपाय	पूनम दत्त	12
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	13–14
मौके का फायदा	विजय शर्मा	15
पूजा – सामिग्री		20

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार के विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रकाशित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN/2010/44791

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

नवरात्र के नौ दिन ही क्यों?

नवरात्र के दो अर्थ बतलाए गए हैं– प्रथम नव का अर्थ है नौ रातें, दूसरे नव का अर्थ है– नया अर्थात नई रातें। नवरात्र वर्ष में दो बार आते हैं। प्रथम पर्व चैत्र मास में व दूसरा पर्व आश्विन मास में आता है।

दुर्गा सप्तशती में देवी माहात्म्य का वर्णन करते हुए कहा गया है– देवी ने इस विश्व को उत्पन्न किया है और वे जब भी प्रसन्न होती है, तब मनुष्यों को मोक्ष प्रदान कर देती हैं। देवी दुर्गा नव विद्या है इसलिए उनकी उपासना के लिए नौ दिन का समय निश्चित किया गया है। नवरात्र पूजन प्रतिपदा से लेकर नवमी तक चलता है। इस पूजन के लिए नौ दिन ही क्यों नियत किए गए हैं, यह सार्थक प्रश्न है। इस विषय में अलग अलग तर्क दिए जाते है।

नवरात्र सम्पूर्ण वर्ष के दिनों का 40वां भाग है अर्थात अगर वर्ष के 360 दिनों का 9 की संख्या से भाग करें तो हमें 40 नवरात्र प्राप्त होंगे। 40 दिनों का एक मंडल कहलाता है और जप भी 40 दिन तक किए जाते हैं। इस प्रकार इन 40 नवरात्रों में 4 नवरात्र देवी भागवत पुराण के अनुसार महत्वपूर्ण बताए गए हैं जिनमें से शरीदय एंव वासंतिक नवरात्र का ही अधिक महत्व है। इस दृष्टि से भी शक्ति की उपासना 9 दिन करना ही उचित अनुभव होता है।

तृतीय शक्ति के तीन गुण हैं सत्व, रजस और तम। इनको तिगुना करने पर 9 की संख्या प्राप्त होती है। जिस प्रकार यज्ञोपवीत में तीन बड़े धागे होते हैं और उन तीनों में प्रत्येक धागा तीन तीन धागों से होता है। उसी प्रकार प्रकृति, योग एंव माया का त्रिवृत रूप नवविध ही होता है। दुर्गा की उपासना में उसके समग्र रूप की आराधना हो सके, इसी उद्देश्य से नवरात्र के नौ दिन निश्चित किए गए हैं।

दुर्गा सप्तशती में देवी के सोलह रूपों को वर्णन किया गया है, लेकिन मूर्तियों में उनके नौ ही स्वरूप है। देवी भागवत और वराह पुराण में भी दुर्गा के नौ रूपों की ही चर्चा की गई है, जिन्हें नव दुर्गा कहा जाता है। देवी के उग्र और शांत दोनों ही रूप हमें देखने को मिलते हैं। शांत रूप में उष्मा, ऊषा , गौरी, अम्बिका आदि देवियों का उल्लेख है, जबकि उग्र रूप में मां काली का रूप सर्वविदित है। इसलिए नौ रूपों के प्रतीक नवरात्र मनाए जाते हैं।

दुर्गा जो कि हिमालय की पुत्री मानी जाती है, उसे अपने घर बुलाने के लिए उनकी मां ने प्रार्थना की और दुर्गापति भगवान शिव ने वर्ष में केवल नौ दिनों के लिए ही यह आज्ञा दी। इन नौ दिनों में भगवती दुर्गा विश्व में विचरण करती हैं। और इस उपलक्ष्य में अपने घर आई पुत्री की पूजा पूरे भारत में शक्ति आराधना के रूप में सम्पन्न की जाती है।

महेश पारासर

दक्षिणा क्यो देते है?

दक्षिणावतामिदमनि चित्रा दक्षिणावतां दिवि सूर्यासः।
दक्षिणावन्तो अमृतं भजते, दक्षिणावंतः प्रतिरंत आयु।।

दक्षिणा प्रदान करने वालों के ही आकाश में तारागण के रूप में दिव्य चमकीले चित्र हैं, दक्षिणा देने वाले ही भूगोल में सूर्य की भांति चमकते हैं, दक्षिणा देने वालों को अमरत्व प्राप्त होता है और दक्षिणा देने वाले ही दीर्घायु होकर जीवित रहते हैं। शास्त्रों में दक्षिणारहित यज्ञ को निष्फल बताया गया है। जिस वेदवेत्ता ने हवन आदि कृत्य मंत्रोपचार करवाए हों, उसे खाली हाथ लौटा देना भला कौन उचित कहेगा?

अमृत वचन

ईश्वर प्राप्ति के तीन ही साधन हैं- ज्ञान, कर्म और भक्ति। जब इन्हें ज्ञानयोग, कर्मयोग व भक्तियोग बना दिया जाता है तो ईश्वर प्राप्ति सुलभ हो जाती है। ईश्वर की उपासना किसी भी पद्धति से की जाय, उपलब्धि एक ही होती है।

इसलिए किसी विशेष पद्धति का दुराग्रह करना हठधर्मिता व संकीर्णता मात्र है जिससे सभी धर्म ग्रस्त है।

पाठकों के पत्र

परम् श्रद्धेय पारासर जी,

मैं आपकी पत्रिका का विगत 6 वर्षो से पठन कर रहा हूँ। पत्रिका काफी ज्ञानकारक है।

मेरा आपसे आग्रह है कि पत्रिका में शिक्षा के ऊपर विशेष लेख प्रकाशित करें, जिससे बच्चों को लाभ मिल सके।

राजीव भटनागर, मेरठ कैंट।

आदरणीय पारासर जी,

भविष्य निर्णय का जून–जुलाई का अंक प्राप्त किया पत्रिका में सभी लेख बहुत अच्छे थे। आपका गुरू पुर्णिमा के ऊपर लिखा संपादन लेख अच्छा लगा।

जवाहरलाल, आगरा

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न 1. मुझे शारीरिक कष्ट चल रहा है। कारण और निवारण बतायें।

तरूण बंसल, आगरा

उत्तर– आपकी शनि की साढेसाती चल रही है। लग्नेश आपकी कुण्डली में कमजोर है। एक पन्ना रत्न धारण करें तथा प्रत्येक शनिवार शनि मंदिर में दीप दान करें।

प्रश्न 2. मेरा दूसरा जॉब कब लगेगा, उपाय बतायें।

कमल किशोर, दिल्ली

उत्तर– नवम्बर 2014 के बाद आपका दूसरा जॉब लग जायेगा। उपाय स्वरूप कुत्तों को टोस्ट/ब्रेड/रोटी खिलाते रहें।

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– 1. मेरे घर का नक्शा देखकर बतायें कि क्या वास्तुदोष है?

सरिता शर्मा, अलीगढ़

समस्या– आपके घर में किचिन उत्तर पूर्व में स्थित है। यह सबसे बड़ा वास्तु दोष हैं। इसे दक्षिण पूर्व में स्थानान्तरित करें, लाभ मिलेगा।

समस्या– 2. मेरे घर में झगड़े बहुत होते हैं। क्या इसका कारण वास्तु दोष है?

सागर अरोडा, आगरा

समस्या– अपने घर का नक्शा तथा अपनी कुण्डली भेजें, उससे पता चलेगा कि झगड़ों का कारण क्या है। उपाय स्वरूप घर में प्रत्येक रविवार गायत्री हवन करवाया करें।

पं. अजय दत्ता
मो. 9319221203

आपके लिये कैसा रहेगा गुरू का कर्क राशि में प्रवेश

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली

मेष– आपकी राशि से सुख स्थान में बृहस्पति का प्रवेश हुआ है। इस परिवर्तन से अष्टम् भाव, कर्म एवं हानि से संबंधित क्षेत्र प्रभावित होंगे।

मेष राशि के जातकों के लिए कर्क का बृहस्पति मिश्रित फल प्रदान करेगा। गोचर वसात् ग्रहों की प्रतिकूलता भी सामान्य फल प्राप्त करने पर मजबूर करेंगी। अगर आप व्यापारी है तो बहुत अधिक सावधानी की आवश्यकता है। व्यापार में उल्टे सीधे निर्णय से आपका पैसा फंस जायेगा। कर्ज बढ़ सकता है। अकारण एंव अनावश्यक पैसा खर्च होने से मानसिक परेशानी बढ़ेगी। नये कार्य में भूल कर भी हाथ नहीं डालें। आय का अधिक हिस्सा पत्नी के उपचार, रोग निवृति पर खर्च करना पड़ेगा। संतान भी पीड़ा पहुँचायेगी। विद्यार्थियों के लिये समय की अनुकूलता नहीं रहेगी। व्यर्थ की भाग दौड़, एंव राज्य द्वारा भी परेशानी सामने आ सकती है। व्यापारिक हिसाब किताब सही रखें। सावधानी रखें वर्ना दुविधा में फंस जायेंगें आप । गुरू के उपाय से कुछ मदद् अवश्य मिलेगी।

वृषभ– आपकी राशि से तृतीय भाव अर्थात् पराक्रम स्थान में बृहस्पति का प्रवेश हुआ है। इस स्थान में बृहस्पति के प्रवेश होने से सप्तम भाव(ग्रहस्थ सुख), नवम् भाव (भाग्य) और एकादश भाव अर्थात् लाभ स्थान पर दृष्टिपात् होगा।

वृषभ राशि वाले जातक भाग्यशाली है बृहस्पति संतान, स्वास्थ्य, भाग्य और लाभ की दृष्टि से यह समय उत्तमोत्तम फल प्रदान करेगा। रूका हुआ पैसा, रूका हुआ कार्य सहज रूप से प्राप्त हो जायेंगें। आपके व्यापार में निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। संतान श्रेष्ठ शिक्षा पाकर मान बढायेगी। आप लम्बे समय से नया कार्य नया व्यापार करने की सोच रहे हैं। समय आ गया है। उसे आप कार्य रूप में बदल दें। स्त्री जातक अस्वस्थ रहते हुए पति के कार्य व्यवसाय में तथा आय वृद्धि में सहायक होगी। गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा। अन्य ग्रहों की प्रतिकूलता कभी कभी परेशान भी रखेगी।

आपकी शनि की साढेसाती भी चल रही है। अतः समय धैर्य एंव सावधानी रखने का है। गुरूवार का व्रत गुरू बीज मंत्र जाप करना हितकर रहेगा।

मिथुन– आपकी राशि से द्वितीय भाव अर्थात् धन स्थान में बृहस्पति का प्रवेश हुआ है। इस परिवर्तन से रोग स्थान अष्टम् स्थान और कर्म स्थान पर दृष्टि रहेगी।

मिथुन राशि के जातकों के लिये मध्यम एंव मिश्रित फलदायक, कार्य में रूकावट, कुटुम्बी जनों से अनावश्यक तकरार, पैतृक सम्पत्ति को लेकर गृह कलह की स्थिति आ सकती है। संयम से काम लें। उदर रोग, वायु विकार, चर्म रोग, गुप्त शत्रु से परेशान रहेगें आप व्यर्थ की भाग दौड़ दूसरो की मदद के लिये एक दो बार बाहर की यात्रा भी संभव है। धर्म में आस्था बढ़ेगी। धार्मिक कार्य यज्ञ आदि में मनोवृत्ति बढ़ेगी। स्थान हानि करों जीव के आधार पर धन हानि भी संभव है, गुरू की उपासना से बचाव संभव है।

इतना होते हुए भी यह न भूलें की आपको शनि की साढेसाती चल रहीं है। सावधानी निहायत जरूरी है।

कर्क– आपकी राशि से लग्न स्थान में बृहस्पति का प्रवेश हुआ है। इसके फलस्वरूप संतान भाव, भाग्य भाव और लाभ भाव पर दृष्टिपात् होगा।

कर्क राशि वाले जातकों के लिये स्वराशिस्थ गुरू भाग्यशाली है। यदि आप व्यवसायी हैं तो निश्चित रूप से अतिरिक्त लाभ प्राप्त कर सम्पत्ति क्रय करेगें तथा नया व्यवसाय भी आरम्भ कर लें तो आश्चर्य नहीं होगा। विद्यार्थी वर्ग अगर प्रशासनिक सेवा से सम्बन्धित परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं या मेडिकल साईन्स का अध्ययन कर रहे हैं। तो विशेष सफलता प्राप्त करेंगें। भाग्य की प्रबलता से सभी कार्य पूर्ण होंगे। संतान एंव पत्नी पक्ष से श्रेष्ठ फल पायेंगें। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। पुत्र रत्न की प्राप्ति सम्भव है। अगर आप विवाहित नहीं है तो इस अवधि में विवाह अवश्य हो जायेगा। इतना होते हुए भी आपको भूलना नहीं चाहिए कि आपकी शनि की साढेसाती 23 जुलाई को लग रही है। सोच समझ कर ही निर्णय करें।

सिंह– आपकी राशि से द्वादश भाव में बृहस्पति का प्रवेश हुआ है। इस स्थान में बृहस्पति का प्रवेश होने से सुख भाव, रोग भाव

शेष पेज 17 पर.....

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
भविष्य दर्शन®
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
CONSULTATION ON PRIOR APPOINTMENT ONLY : PH: 09717195756
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666

शत्रु बाधा निवारण हेतु बगलामुखी साधना

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता ;अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

शत्रु संहार के लिये तथा शत्रु बाधा के निवारण के लिये अगर कोई साधना है तो वह है भगवती बगलामुखी साधना। राजसत्ता पर बैठा व्यक्ति चाहे वह कोई भी हो अनिवार्य रूप से इस साधना की प्राप्ति के लिये आतुर होता है। इतिहास साक्षी है कि भारत के बहुत से राष्ट्रपति एंव प्रधान मंत्री दतिया में बगलामुखी के सिद्ध पीतांम्बरा पीठ पर अपना माथा टेकने आते रहे है।

बगलामुखी को स्तंभन की देवी माना जाता है। वह शत्रु को स्तंभन कर देने में अद्वितीय हैं। शत्रु बाधा हो या कोर्ट कचहरी का चक्कर, बगलामुखी साधना से अनुकूलता की प्राप्ति होती ही है। भगवती बगलामुखी के मंत्र के बारे में यह कहा जाता है कि यह अकेला मंत्र प्रचंड तूफान को भी रोकने मे पूर्णतः सक्षम है। ऐसे अद्वितीय मन्त्र की साधना करना जीवन का सौभाग्य है। अपनी जीवन रक्षा तथा विपरीत परिस्थितियों से बचाब के लिये यह अद्वितीय है। शत्रु विनाश व मुकदमें में इच्छानुसार विजय प्राप्ति कराने में तो यह रामबाण है। बाहरी शत्रुओं की अपेक्षा आंतरिक शत्रु अधिक प्रबल व घातक होते है। अतः बगलामुखी साधना की मानव कल्याण तथा सुख समृद्धि हेतु विशेष उपयोगिता दृष्टिगोचर होती है।

बगलामुखी साधना एंवम् उपासना विधि– सर्वप्रथम साधक को बगलामुखी साधना प्रारम्भ करने हेतु शुभ मुर्हूत का चयन करना होता है। जैसे गुरू पुष्य योग, दीपावली या होली की रात्रि या अन्य शुभ मुर्हूत किसी योग्य विद्वान व्यक्ति से जानकर पूजा प्रारम्भ करें।

उत्तम मुर्हूत के पश्चात् किसी शांत एंव पवित्र साधना स्थल का चयन करें। उस स्थान को शुद्ध गंगाजल से धोकर पवित्र कर लें मिटी या गाय के गोबर से लीप लें। तत्पश्चात् एक लकडी की चौकी पर पीला रेशमी वस्त्र बिछाकर हल्दी मिले चावल से अष्ट दल बनाकर उस पर सिद्ध किया हुआ बगलामुखी यन्त्र स्थापित करें।

साधना से पूर्व ध्यान रखने योग्य बातें

1. पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करे।
2. साधना से पहले गुरू का ध्यान करें व उनसे मन ही मन आज्ञा ले।
3. साधना बच्चों व डरपोक व्यक्तियों को नहीं करनी चाहिये।
4. साधना के समय मुख उत्तर या पूर्व दिशा की ओर होना चाहिये।
5. बैठने के लिये आसन पीले रंग का होना चाहिये।
6. पीले वस्त्र धारण करके ही यह साधना प्रारम्भ करनी चाहिए।
7. मंत्र जाप पीली हल्दी की माला से ही करना चाहिये। पूजन हेतु पीले पुष्प, पीला नैवेद्य, गोघृत का प्रयोग करना चाहिये।
8. इस साधना को रात्रि 1 से 12 के मध्य प्रारम्भ करे।
9. इस साधना के दौरान व्यक्ति दूध केसर युक्त बेसन के पदार्थ, केला, पीली मिठाई इत्यादि का सेवन करें।
10. इस यन्त्र की स्थापना के पश्चात् उसका पूजन धूप दीप, पीत पूष्पों, पीले नौवद्य, पीले फलों, पीले चन्दन, हल्दी इत्यादि से करें व निम्न बातों का ध्यान रखे।
11. मन्त्रों के जाप 1 लाख 7,9,11 या 21 दिन के अन्दर पूरें करें। ध्यान रहें प्रथम दिन जितने जाप करें उतनी संख्या में ही जप प्रतिदिन करें। कम या अधिक नहीं।
12. जप संख्या का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण तर्पण का दशांश मार्जन व मार्जन का दशांश ब्राहण भोजन करना चाहिये। इस प्रकार साधना करने से सिद्धि प्राप्त होती है।

विशेष– साधारण गृहस्थ व्यक्ति सिर्फ सिद्ध बगलामुखी यन्त्र की स्थापना पीले वस्त्र पर हल्दी मिले चावल से अष्टकमल बनाकर करें व रोजाना पीले वस्त्र धारण कर पीले आसन पर बैठ कर हल्दी की माला से जाप करें व गोघृत का दीपक जलायें व पीले पुष्प व पीले नैवद्य का भोग लगाकर रोजाना 1 माला

शेष पेज 18 पर.....

Free services offered by us on our website www.bhavishydarshan.in

1. Horoscope Making
2. Match-Making
3. Lal Kitab Predictions
4. Successful Name
5. Baby Names
6. Favourable Gems
7. Panchang
8. Calender
9. Bi-monthly Magzine
10. Daily/Yearly Rashiphal
11. Vastu Remedies
12. Details of Yantra/Mantra

Connect With Us

and get 15% discount*

*valid for a single user

मर्यादित होगी दयालबाग की जनकपुरी

आगरा की राम बारात उत्तरभारत में प्रसिद्ध हो गई है, यह भगवान श्री राम की महती कृपा और आगरा नगरवासियों की अगाधश्रद्धा का ही प्रसाद है। नगर में राम बरात करीब एक शताब्दी पूर्व से निकलना प्रारम्भ हुआ है। उन दिनों में मनोरंजन के साधन रेडियो व सिनेमा ही थे, पर ये सभी के लिए सुलभ नही थें। अतः रामलीला, कृष्ण लीला, मडई मेले आदि के माध्यम ही जन साधारण को उपलब्ध थे।

रामलीला का मंचन मनकामेश्वर स्थित लाला चन्नोमल की बारहद्वारी में हुआ करता था तथा धनुष भंग होने तक की लीला रावतपाड़ा में ही मुन्ना लाल पेठे वाले की दुकान से आगे बनी बारहटोटी तिकोननिया पर होती थी। धनुषभंग के बाद की लीलाएँ रामलीला मैदान पर होती थी। रावण वध के बाद भरतमिलाप की लीला शरद पूर्णिमा के दिन होती थी।

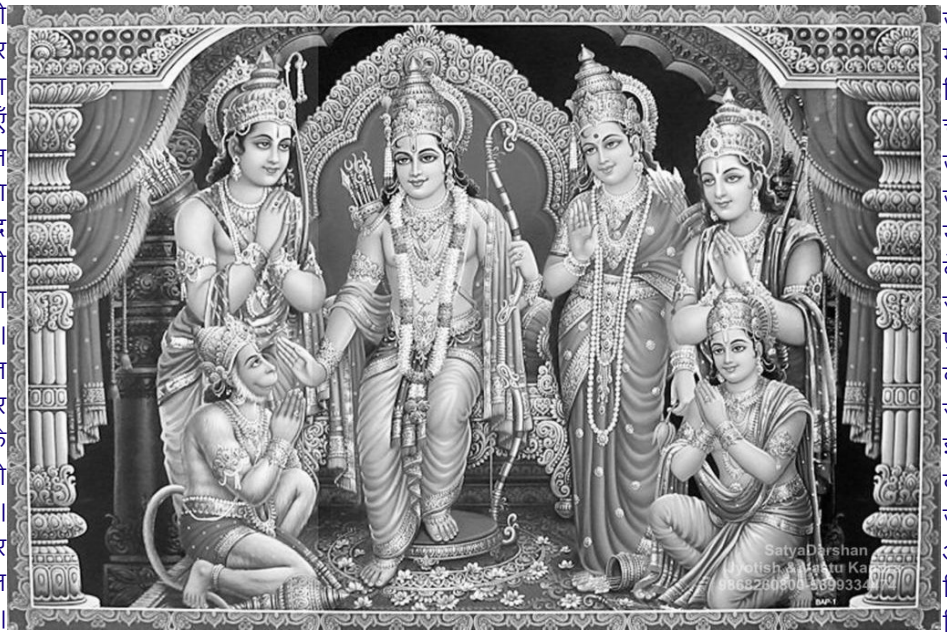

राम बरात बैलगाडियों और ढ़केलों पर गैस के हण्डों की रोशनी में निकलती थी। कुछ झाकियाँ और ऊँट घोड़े शामिल हुआ करते थें। समय के साथ साथ राम बरात की भव्यता और प्रसिद्धि बढी। भीड़ इतनी बढ़ी कि दूरदराज से आने वालों के लिए रात बिताने की समस्या हो गई। अतः सिनेमाघरों ने चार के बजाय छः शो दिखाने शुरू कर दिए। शहरों के मकानों के छज्जे भर जाते थे। उनदिनों नगर में उत्सव का माहौल होता था।

मुझे याद है कि जनकपुरी को महोत्सव के रूप में मनाने की शुरूआत सन् 1964 में नौबस्ता के नागरिकों द्वारा की गई थी। गोपेश्वर की बगीची में बरात ठहरी थी, वहीं तुलसी सालिगराम का विवाह सम्पन्न हुआ। सन् 1964 के बाद आगरा में जनकपुरी के आयोजन को भव्यता और दिव्यता प्राप्त हुई। बेलनगंज, भैरोंबाजार, बारह भाई की गली, बाग मुजफ्फर खाँ के बाद दिल्ली गेट, विभवनगर, संजय प्लेस, कमला नगर, सदर बाजार, विजयनगर कौलोनी, बल्केश्वर, लायर्स कौलोनी, आवास विकास कौलोनी, खन्दारी, प्रतापनगर, जयपुर हाउस आदि क्षेत्रों में सज चुकी है।

इस वर्ष 2014 में जनकपुरी सजाने का सौभाग्य दयालबाग क्षेत्र की धर्म प्रेमी जनता को प्राप्त हुआ है। दयालबाग में **पहली बार** सजने वाली जनकपुरी के लिए नागरिकों में बहुत उत्साह है। स्वामीबाग और दयालबाग की सत्संग सभाओं से भी भरपुर सहयोग मिलने की आशा है। राम बारात के स्वागत की व्यवस्था हेतु श्री जनकपुरी महोत्सव आयोजन समिति का गठन कर लिया गया है। जिसके संरक्षक वी.के. गर्ग (एल्डीको ग्रुप), सुरेशचन्द्र गर्ग (तपन ग्रुप), महेन्द्र सिंह प्रधान, अध्यक्ष जे. एस फौजदार (कावेरी ग्रुप) स्वागताध्यक्ष सतीश अरोडा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, डा. मुनीश्वर गुप्ता, महामंत्री सुरेश अग्रवाल, कोषाध्यक्ष अनूप अग्रवाल, संयोजक अनिल चौधरी बनाए गए है। समिति का कार्यालय 100 फुटा रोड़,संजीवनी हॉस्पीटल के निकट खोल गया है।

जनक पुरी सजाने की परम्परा के 50 वें वर्ष में (1964–2014) दयालबाग क्षेत्र की जनकपुरी मर्यादित होगी, जिसमें सामाजिक चेतना जैसे सौर ऊर्जा, पर्यावरण, जल संरक्षण, यमुना शुद्धीकरण, बेटी बचाओ आदि सन्देशों को प्रसारित करने वाली झाकियों के साथ धार्मिक झाकियाँ भी लगाने की योजना है। जनकपुरी का आयोजन 17 सितम्बर से 21 सितम्बर 2014 तक चलेगा। समस्त आगरा नगर वासी जनक नन्दिनी की कृपा का दर्शन करने हेतु सादर आमंत्रित हैं।

सुरेश अग्रवाल, महामंत्री
श्री जनकपुरी महोत्सव आयोजन समिति, दयालबाग क्षेत्र

मेवाड़ विश्वविद्यालय व **अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ**
के संयुक्त तत्वाधान में
ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समीति, आगरा
के अंतर्गत करें
4 वर्षीय इंटिग्रेटेड पोस्ट ग्रेजुएशन एवं पीएच. डी.
आवश्यक शैक्षणिक योग्यता - स्नातक (ग्रेजुएशन)
अथवा स्नातकोत्तर (पोस्ट ग्रेजुएशन)

देय राशि	₹ 75000/- प्रति वर्ष
विवरण पत्रिका	₹ 500/-
प्रवेश परीक्षा शुल्क	₹ 1000/-

भविष्य दर्शन® ज्योतिष एवं वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा। मो. 9557775262, 9719666777

!! पुत्रदा एकादशी एवं अजा एकादशी व्रत !!

पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी
भागवताचार्य

कुन्तीनन्दन सत्यव्रती धर्मराज युधिष्ठिर ने जगत् नियन्ता सच्चिदानन्द स्वरूप भगवान श्री कृष्ण को प्रणाम कर पूछा– हे व्रजांगनाओं के प्राणप्यारे मधुसूदन श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में किस नाम की एकादशी होती है। और उसका क्या महत्व है? कृपया लोक कल्याण के लिए मेरे समक्ष उसका वर्णन कीजिए।

भगवान श्रीकृष्ण बोले– हे राजन्! प्राचीन काल की बात है, द्वापर युग के प्रारम्भ में माहिष्मतीपुर में महीजित् राजा अपनी प्रजा का पुत्रवत् पालन करते हुए धर्मपूर्वक राज्य करते थे, किन्तु उन्हें कोई पुत्र नही था, इसलिए वह राज्य उन्हें सुखदायक नहीं लगता था। पुत्राभाव के कारण राजा का मन उद्विग्न रहता था। ढलती अवस्था को देख देख कर राजा बहुत चिन्तित हुए। उन्होंने प्रजावर्ग में बैठकर इस प्रकार कहा– प्रजाजनो! इस जन्म में मैने किसी का अनिष्ट नहीं किया। मैंने अपने खजाने को न्याय से उपार्जित धन से ही भरा है। खजाने के धन का उपयोग भी धर्म कार्यों में ही किया है। ब्राह्मणों और देवताओं का धन भी मैने कभी नहीं लिया है। प्रजा का पूर्ण ध्यान रखा। उनके सुख दुःख का साथी रहा। धर्म से पृथ्वी पर अधिकार जमाया तथा दुष्टों, डाकुओं, आततायियों को, वे पुत्रों और बन्धु–बान्धवों के समान ही क्यों न रहे हों, दण्ड दिया है। सम्माननीय एवं शिष्ट पुरूषों का सदा आदर किया और किसी को द्वेष का पात्र नहीं समझा। मैनें किसी दूसरे की धरोहर भी नहीं ली। फिर क्या कारण है, जो मेरे घर में आज तक पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ। मैं क्यों पुत्र सुख से वंचित हूँ? आप लोग इसका विचार करें।

राजा महीजित् की धर्मयुक्त बात सुनकर मंत्रीगण, पुरोहित, ब्राह्मण एंव प्रजा के प्रतिनिधियों ने राजा के हित का विचार करके गहन वन में प्रवेश किया। राजा का कल्याण चाहने वाले वे सभी अनेकानेक आश्रमों में सन्तों, ऋषियों के दर्शन करते हुए ऋषिसेवित आश्रमों की तलाश करते करते एक आश्रम में धर्म के तत्वज्ञ, सम्पूर्ण शास्त्रों के विशिष्ट विद्वान्, जितेन्द्रिय, जितात्मा, जितक्रोध, निराहार, संयमी, बडे तपस्वी एंव अत्यन्त वयोवृद्ध दीर्घायु महात्मा लोमश मुनि को देखा। उनका शरीर लोम से भरा हुआ था। वे ब्रह्माजी के समान तेजस्वी है। जिनका आभामण्डल प्रखर सूर्य के तेज के समान प्रदीप्त हो रहा है। एक एक कल्प बीतने पर उनके शरीर का एक एक लोम विशीर्ण होता टूटकर गिरता है, इसीलिए उनका नाम लोमश हुआ है। वे महामुनि त्रिकालज्ञ हैं। उन्हें देखकर सभी को बड़ा हर्ष हुआ और उन्हें सभी ने साष्टांग प्रणाम किया।

लोमश जी ने पूछा– तुम सब लोग यहाँ किस कारण से आये हो? अपने आगमन का कारण बताओ। तुम लोगों के लिए जो हितकर कार्य होगा, उसे मैं अवश्य करूँगा।

लोमश ऋषि के ऐसे आनन्ददायी वचनों को सुनकर सभी बोलें– हे महर्षि! हे ब्रह्मन्! इस समय महीजित् नाम वाले राजा जो माहिष्मती में शासन करते हैं उन्हें कोई पुत्र नहीं है। हम लोग उन्हीं की प्रजा हैं, जिनका उन्होनें पुत्र की भाँति पालन किया है। उन्हें पुत्रहीन देख, उनके दुःख से दुखित हो हम इस सघन वन में आए है। क्योंकि सघन वन में महर्षियों एंव महापुरूषों के दर्शन से बड़े बड़े कष्ट दूर हो जाते है? हे द्विजोत्तम राजा के भाग्य से इस समय हमें आपका दर्शन मिल गया है। हमारी मनोकामनायें आपके दर्शन से ही पूर्णत्त्व को प्राप्त हो गयी है। आप सम्पूर्ण सिद्धियों एंव ऋषियों के प्रदाता हैं। आपका दर्शन मंगलकारी है। अब हमें उस उपाय का उपदेश कीजिए, जिससे राजा को पुत्र की प्राप्ति हो।

उनकी बात सुनकर महर्षि लोमश दो घड़ी तक ध्यानमग्न हो गए। तत्पश्चात् राजा के प्राचीन जन्म का वृत्तान्त जानकर उन्होंने कहा– प्रजावृन्द! सुनो–राजा महीजित् पूर्व जन्म में मनुष्यों को चूसने वाला निर्धन वैश्य था। वह वैश्य गाँव–गाँव घूमकर व्यापार किया करता था। एक दिन ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष में दशमी तिथि को जब मध्याह्न का सूर्य तप रहा था, वह गाँव की सीमा में एक जलाशय पर पहुँचा। स्वच्छ, सुस्वादु एंव निर्मल जल युक्त बाबली को देखकर वैश्य ने वहाँ जल पीने का विचार किया। इतने ही में हाल की ब्याही हुए गाय अपने बछड़े के सहित वहाँ आ पहुँची। वह प्यास से व्याकुल और ताप से पीड़ित थी। अतः जलाशय में जाकर जल पीने लगी। वैश्य ने पानी पीती गाय को हाँककर दूर हटा दिया और स्वंय पानी पिया। उसी पाप–कर्म के कारण राजा इस समय पुत्रहीन हुए हैं। किसी जन्म के पुण्य से इन्हें अकण्टक राज्य की प्राप्ति हुई है। अतः हे प्रजाजनो। श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में जो एकादशी होती है वह पुत्रदा के नाम से विख्यात है। वह मनोवांछित फल प्रदान करने वाली है। तुम लोग उसी का व्रत करो एंव रात्रि जागरण करो।

यह सुनकर प्रजाओं ने प्रायश्चित रूप में नगर में आकर विधिपूर्वक राजा सहित पुत्रदा एकादशी के व्रत का अनुष्ठान किया एंव हरि नाम संकीर्तन करते हुए विधि पूर्वक जागरण भी किया और उसका निर्मल पुण्य राजा को दे दिया। तत्पश्चात् रानी ने गर्भ धारण किया और प्रसव का समय आने पर सुन्दर, गुणवान एंव बलवान पुत्र को जन्म दिया।

इसलिए हे राजन् इसका नाम **पुत्रदा एकादशी** पड़ा। इसे पवित्रा एंव पापनाशिनी एकादशी भी कहते है। इसका माहात्म्य सुनकर मनुष्य पाप से मुक्त हो जाता है तथा इहलोक में सुख पाकर स्वर्गीय गति को प्राप्त होता है।

शेष पेज 16 पर.....

कैसे लगेगा बच्चों का पढ़ाई में मन

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

शिक्षा हमारे जीवन का एक अनिवार्य अंग है। प्रत्येक माता पिता चाहते हैं कि उनका बच्चा कक्षा में सबसे अच्छे अंक लाये व सदैव अच्छे अंकों से कक्षा में उत्तीर्ण हो। प्रतिस्पर्धा की इस दौड़ में किसी भी अच्छे शिक्षण संस्थान में प्रवेश पाना बहुत ही कठिन है। अभिभावकों के समक्ष कई बार ऐसी समस्या आती है कि उनका बच्चा पूरी मेहनत करने के पश्चात् भी कक्षा में अच्छे अंक नहीं ला पाता है। कई बार बच्चों को चीजें याद नहीं हो पाती है क्योकि कई बार पढ़ते समय वह पूर्ण रूप से एकाग्र नहीं हो पाते है। ऐसी विभिन्न समस्याओं से कई अभिभावकों को परेशान होते देखा है। ज्योतिषीय उपायों द्वारा उनकी समस्याओं का समाधान भी किया है। इन समस्याओ के ज्योतिषीय समाधान के साथ साथ यदि कुछ मुख्य बातों का ध्यान रोजमर्रा की जिन्दगी में रखें तो निश्चित रूप से हमे अच्छे परिणाम मिलेगें।

बच्चों का पढने का कमरा सदैव ईशान कोण में बनायें।

पढते समय बच्चों का मुख हमेशा पूर्व दिशा की ओर रखें।

पढ़ाई की टेबल के सामने सरस्वती माँ का चित्र आर्शीवाद की मुद्रा में लगायें।

पढने की टेबल पर ऐजुकेशन टावर लगायें। यह बच्चों को अपनी जिंदगी में ऊपर उठने की प्रेरणा देता है।

अष्ट धातु का पिरामिड़ बच्चों के पढने के कक्ष में रखने से बच्चों में एकाग्रता बढ़ती है।

पढ़ने में बच्चों का यदि ध्यान कम लगता है तो उन्हें गले में स्फटिक की माला पहनायें। इससे उनका मस्तिष्क शान्त होकर पढ़ाई में एकाग्रता बढ़ाता है।

पढने बालो बच्चों को गणेश भगवान की पूजा करनी चाहिये। **ऊँ वक्रतुण्डाय ऊँ** मन्त्र का जाप करते हुऐ गणेश जी को दुर्बा घास चढ़ानी चाहिये।

ऐं सरस्वतयै नमः मन्त्र का जाप पढ़ने बाले बच्चों के मस्तिष्क को तेज बनाता है। गले में बच्चे सरस्वती यंत्र का लाकेट धारण करें ये अतिशुभ फल देता है।

सूर्य भगवान को तांबे के लोटे से अर्घ्य देने से पढ़ने वाले बच्चों में स्फूर्ति जाग्रत होती है।

शिक्षा के अच्छे परिणामों के लिये बच्चों के कक्ष में महान पुरूषों के चित्र अवश्य लगाये जैसें रविन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानन्द आदि।

अच्छे परिणामों के लिये बच्चों को पंचमेश का नग रत्न अवश्य धारण करायें।

पढ़ने बाले बच्चों के कमरे का रंग हल्का हरा या हल्का पीला कराना चाहिये।

पढने की टेबल पर स्फटिक का श्री यन्त्र स्थापित करने से बच्चों का मन शिक्षा की ओर अधिक एकाग्र हो जाता है।

पढ़ने बाले बच्चों के भोजन में हरी शाक सब्जी का प्रयोग अधिक करना चाहिये। यह बुद्ध का कारक होते है और बुद्ध बुद्धि का भोजन में हरी सब्जी व सलाद ग्रहण करने से बच्चों का बुद्ध ग्रह मजबूत होता है तथा बच्चे गणित जैसे विषयों में मजबूत होते है।

पढने बाले बच्चे रोज तुलसी जी को प्रणाम करें व उनके पाँच पत्ते ग्रहण करें। यह मस्तिष्क को तीव्र बनाता है।

प्रतिदिन गायत्री मन्त्र का जाप करने से भी बच्चों की कार्यक्षमता में बढ़ोतरी होती है।

बच्चों की मेज के सामने सरस्वती मंत्र सफेद कागज पर लाल पैन से लिखकर लगा दें, जिससे बच्चों के सामने हर समय वह मन्त्र लिखा रहे और समय पर वह उसका मानसिक उच्चारण कर सकें।

यदि आपका बच्चे स्कूल में बहुत कमजोर है व किसी भी कार्यक्रम में भाग नहीं लेते है तो उसके कमरे में भागते हुये घोडे के चित्र एंव रेसिंग कारों के चित्र लगायें। इससे आपका बच्चा धीरे धीरे स्कूल के कार्यक्रमों मे भाग लेने लगेगा व पहले की अपेक्षा अधिक सक्रिय हो जायेगा।

शेष पेज 18 पर.....

Free services offered by us on our website www.bhavishydarshan.in

1. Horoscope Making
2. Match-Making
3. Lal Kitab Predictions
4. Successful Name
5. Baby Names
6. Favourable Gems
7. Panchang
8. Calender
9. Bi-monthly Magzine
10. Daily/Yearly Rashiphal
11. Vastu Remedies
12. Details of Yantra/Mantra

Connect With Us

and get 15% discount*

*valid for a single user

ज्योतिष की वास्तविकता

डॉ. अरविन्द मिश्र
ज्योतिषाचार्य, ज्योतिष भूषण, वास्तुशास्त्राचार्य

वर्तमान समय में मैंने कुछ लोगो से सुना है कि हम ज्योतिष में विश्वास नहीं करते हैं। मुझे लगता है कि उनको ज्योतिष की समुचित जानकारी नही है।

आज विज्ञान ने अनेको आविष्कार कर प्राणी के जीवन को सुखद एंव समृद्धि शाली बना दिया है। वैज्ञानिकों द्वारा निर्मित वस्तुऐं हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गयी हैं। लेकिन आज जिस तरह वैज्ञानिकों द्वारा प्रकृति से छेड़ छाड़ की जा रही है। वह मानवीय जीवन के लिये कष्ट प्रद सिद्ध होगी।

ज्योतिष उन विधाओं में से एक है जिसमें हमारे ऋषियों की चमत्कारी मेघा का प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है। आज के विद्वान विज्ञान के तमाम विकसित यंत्रों के उपयोग और क्लिष्ट गणितीय सूत्रों के सहयोग से किए गए शोध कार्यो के बाद जिन निष्कर्षो पर पँहुचे, उन्हें ऋषियों ने हजारों वर्ष पहले तब स्थापित कर दिया था, जब इस प्रकार के कोई संसाधन नहीं थे। एस्ट्रोलोजी (फलित ज्योतिष)को लेकर मतभेद हो सकते हैं लैकिन एस्ट्रोनामी (गणित ज्योतिष) तो विशुद्ध विज्ञान का विषय है। भारतीय मनीषियों ने आकाशीय पिण्डों के अध्ययन के जो सूत्र हजारों साल पहले निर्धारित किये थे, वे आज भी उन्हीं रूपों में यथावत् मान्य है। जैसे आकाश को 27 नक्षत्रों एंव 12 राशियों में वर्गीकृत किया जाना। ग्रहों उपग्रहो व नक्षत्रों के बीच की सापेक्ष गति (रिलेटिव स्पीड) का सही सही आकलन तथा उस आधार पर उसकी आकाशीय स्थितियों का पूर्व निर्धारण। आकाशीय पिण्डों की गति मापन के लिए कोणीय गति का निर्धारण। उसके लिए आकाश वृत को 360 अंशो में विभक्त करना। यही नहीं सूक्ष्म मापन के लिए तब निर्धारित अंश, कला, विकला, जो आज डिगरी, मिनट, सैकेण्ड के रूप में स्थापित है। सूर्य एंव चन्द्र ग्रहण किन खगोलीय परिस्थितियों में संभव होते है इनकी ठीक ठीक जानकारी तथा उसकी सटीक गणना भी हजारों वर्ष पूर्व विपरीत परिस्थितियों में भी कर ली गई है। ग्रहण के लिए अनिवार्य सूर्य एंव चन्द्र के भासित भ्रमण पथ के संपात बिन्दुओं (एसेन्डिग डिसेन्डिग नोडस) के राहु एंव केतु के संबोधन से नामित कर उन्हें गणित में शामिल करके ग्रहण के स्पर्श मध्य एंव मोक्षकाल की सही गणना करने की पद्धति आज भी उसी रूप में मान्य है।

वर्तमान विज्ञान को इस निष्कर्ष पर पँहुचने में बहुत समय लगा कि समस्त आकाशीय पिण्डों में परस्पर सघन सम्बन्ध है तथा ब्रह्माण्ड एक चेतन इकाई की तरह कार्य करता है किन्तु ज्योति विज्ञान तो हजारों वर्ष से इसी अवधारणा को आधार मानकर आकाशीय पिण्डों के पास्परिक प्रभाव (म्यूचुअल एफैक्टस) का अध्ययन करता है और सार्थक निष्कर्षो तक पहुँचता रहा है। ऐसे और तमाम तथ्य हैं जिनके आधार पर इस असाधारण विज्ञान की शोध और स्थापना करने की अद्भुत क्षमता का लोहा मानना पड़ता है। यह हमारा दुर्भाग्य रहा कि मध्ययुग में लम्बे समय तक ज्योतिष विद्या उन तथा कथित ज्योतिविज्ञों तक की सीमित रही, जो उसका उपभोग अपने निर्वाह अर्थोपार्जन के लिये करते रहे। इसी काल में ज्योतिष के साथ तमाम रूढिवादी अन्ध मान्यताएँ जुड गई। इन्ही कारणों से ज्योतिष विद्या को काफी बदनामी भी झेलनी पड़ी।

लेकिन समय नें करवट ली। राष्ट्रीय एंव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ज्योर्तिविज्ञान पर शोध कार्य किये जाने लगे।

प्रतिभावानों ने उस ओर ध्यान दिया। उसमें प्रवेश कर गए विकारों को हटाकर संस्कारों को प्रकाशित करने का क्रम चल पड़ा। ज्योतिष विद्या को पुनः उसके जनोपयोगी विवेक सम्मत रूप में जन जन तक पहुँचाने के लिये भी प्रयास किये जाने लगे हैं।

ज्योतिष अपने स्वाभाविक रूप में एक ऐसी अद्भुत विद्या है जो भौतिक परिस्थितियों (आकाशीय पिण्डों की साापेक्ष स्थिति) मानसिक स्थितियों (मन बुद्धि की दिशा और क्षमताओं) तथा चेतन (आध्यात्मिक प्रवादों) के सुसंयोग से जीवन के समग्रता की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। किसी भी विद्या का उच्च स्तरीय लाभ उठाने के लिये उसके प्रति वैज्ञानिक जैसी निष्ठा और कलाकार जैसी दक्षता की जरूरत पड़ती है। ज्योतिष के संदर्भ में भी यह अनुशासन जरूरी है। जब उसके हलके ढंग से कुछ स्थूल क्रिया कलापों कर्मकाण्डों तक ही सीमित मानकर

शेष पेज 18 पर.....

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

शनि दोष निवारण के टोटके

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता

1. हर शनिवार को उपवास रखें। उपवास शाम को छोड़ें।

2. शनिवार को व्रतस्थ रहना चाहिए। सूर्यास्त के पश्चात् हनुमानजी का पूजन करके संपन्न करना चाहिए। पूजन में सिंदूर काली तिल्ली का तेल, इस तेल का दीपक एंव रक्त वर्णीय पुष्प मुख्य हैं। पांच या सात शनिवार के इस प्रयोग से ही साढ़ेसाती का प्रभाव कम हो जाता है।

3. प्रत्येक शनिवार को वट एंव पीपल के वृक्ष के नीचे सूर्योदय से पूर्व कड़वे तेल का दीपक प्रज्जवलित करके शुद्ध दूध एंव धूपादि अर्पित करना चाहिए।

4. शनिवार के दिन बंदरों और काले कुत्तों को लड्डू खिलाने से भी शनि के कुप्रभाव का शमन हो जाता है।

5. काले घोडे की नाल अथवा नाव की सतह की कील से बना छल्ला धारण करना शुभ है।

6. शनिवार को अपने हाथ के नाम का उन्नीस हाथ लंबा काला धागा लेकर उसको बंटकर, माला की भांति गले में पहनें। इस प्रयोग से शनि की अनिष्टता शांत हो जाती है।

7. शुक्रवार की रात में काले चने पानी में भिंगों दें। शनिवार को ये चने, कच्चा कोयला, हल्की लोहे की पत्ती एक काले वस्त्र में बांधकर मछलियों के मध्य डाल दें। पूरे एक वर्ष तक प्रत्येक शनिवार को यह क्रिया करे। इसके फलस्वरूप शनिजनित कोप शांत होता है। जो व्यक्ति मछलीभक्षी हों उन्हें प्रयोगकाल में भूलकर भी मछली का भक्षण नहीं करना चाहिए।

8. चोकरयुक्त आटे की 2 रोटी लेकर एक तेल और दूसरी घी पर चुपड़ दें। तेल वाली रोटी पर थोड़ा मिष्ठान रखकर काली गाय को खिला दें। जब गाय वह रोटी खालें तो उसे दूसरी घी वाली रोटी भी खिला दें।

9. प्रत्येक शनिवार को बंदरो को केला, मीठी खील, गुड़ एंव काले चने खिलाने से शनि की शांति होती है।

10. काले कुत्ते को शनिवार को तेल चुपड़ी रोटी मिष्ठान रखकर खिलाने से भी शनि की शांति हो जाती है।

11. बिच्छू बूटी अथवा शमी की जड़ श्रवण नक्षत्रयुक्त शनिवार को प्राप्त कर काले रंग के धागे के साथ दांये हाथ में बांधने से शनि का प्रकोप घटने लगता है। ❋❋❋

प्राण मुद्रा

विष्णु पाराशर
ज्योतिष शास्त्राचार्य, कर्मकाण्ड विशेषज्ञ

जैसा कि मुद्रा के नाम से स्पष्ट होता है कि इस मुद्रा से प्राण का संचार होता है प्राण हमारे शरीर के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। प्राण एक जीवनी शक्ति है। अतः इस मुद्रा द्वारा जीवनी शक्ति को प्रबल किया जा सकता है।

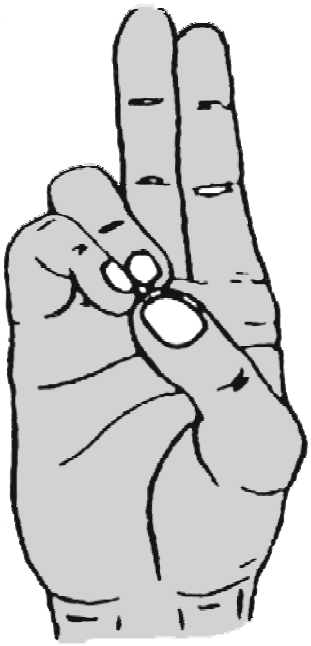

विधि– प्राण मद्रा करने के लिए प्रातः व सांय संध्या काल में किसी भी आसन पद्मासन, सिद्ध आसन व किसी भी सुख आसन में करना चाहिए। अनामिका के ऊपरी हिस्से और कनिष्ठिका के ऊपरी हिस्से को अंगूठे के ऊपरी हिस्से से मिलाएं। शेष दोनों अंगुलियों को मुक्त छोड दें, दबाव न देते हुए विल्कुल सीधा। इस तरह प्राण मुद्रा बनती है। मुद्रा शरीर की जीवनी शक्ति को बढाती है और पूरे शरीर को सामान्य बनाए रखती है।

लाभ

1. यह मुद्रा शारीरिक दुर्बलता दूर करती है व मन शांत करती है।

2. आंखों के दोषों को दूर करके ज्योति बढाती है।

3. शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति बढाती है।

4. विटामिन की कमी को दूर करती है तथा थकान दूर करके नवशक्ति का संचार करती है।

5. चेहरे, आंखों और शरीर को चमकदार बनाती है।

6. लंबे उपवास काल के दौरान भूख–प्यास नहीं सताती।

नोट– यह मुद्रा 15 मिनट तक लगायें तथा लम्बा अभ्यास होने पर समय सीमा बढ़ा सकते हैं। ❋❋❋

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़,
आगरा। फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719666777
ई मेल : mail@bhavishydarshan.in

नेतृत्व में दक्षता प्राप्त करें

सुरेश अग्रवाल
आगरा

इस बात को तो सभी जानते हैं कि टीम भावना से मिल जुलकर खेल खेलने से सदैव दक्षता प्राप्त होती है और टीम को विजय मिलती है। जहाँ टीम के सदस्यों में समन्वय नहीं है और परस्पर वैमनस्य है, वहाँ अच्छे खिलाडियों के होते हुए भी टीम हार जाती है। जो टीम लीडर सभी खिलाडियों के प्रति समान व्यवहार और सम्मान की भावना न रखकर भेदभावपूर्ण व्यवहार करता है, तो उस टीम को असफलता ही मिलेगी। दूसरों से मिलजुलकर काम करवाने बाला टीम लीडर अपना अंहकार दूसरों पर नहीं लादता है। अपने साथ काम करने वालों के साथ मैत्री और अपने पन का व्यवहार कार्य में दक्षता लाता है। जहाँ जहाँ पराये पन की भावना, भेदभाव और अनुशासनहीनता होगी, वहाँ नेतृत्व में एकात्मता और दक्षता हो ही नहीं सकती है।

फिर इन्हीं व्यवहारिक बातों को हम अपने उद्योग, व्यापार, कार्यालयों, सहयोगियों, परिवार आदि क्षेत्रों में स्वीकार क्यों नही करते? अपने साथियों की व्यक्तिगत या घरेलू समस्याओं के प्रति सहानुभूति रखकर यथा शक्ति उनकी सहायता करना एक कुशल नेतृत्व दक्षता का परिचायक है। अच्छे काम के लिए कर्मचारियों की प्रशंसा करना, उनकी कमियों को दूर करने के लिए मार्गदर्शन करना तथा फैक्टरी की उन्नति का श्रेय कर्मचारियों को देना भी दक्ष नेतृत्व की पहचान है।

"तुम तो भुलक्कड़ हो, बुद्धु हो तुम कुछ नहीं जानते हों " ऐसा कहने से बात बिगड़ जाती है। हमें यह विचार छोड़ देना चाहिए कि बिना डाँट–डपट के, बिना डराने–धमकाने के और बिना चालाकी के काम नहीं चलता है। सच्ची बात तो यह है कि ऐसा व्यवहार करने से हम उन कर्मचारियों, मित्रों, बच्चों, सहयोगियों तथा रिश्तेदारों को पराया बना देते हैं। और सदा के लिए उन्हें अपने से दूर कर देते है। कटु वाणी का प्रयोग दूसरे मनुष्य के हद्रय में क्षोभ पैदा कर देता है– वह हमारा विरोधी बन जाता है। वाणी में मधुरता, प्रियता और सत्यता से नेतृत्व में दक्षता आती है और समाज में आपकी स्वीकार्यता बढ़ती है।

टीम लीडर अपनी टीम के सदस्यों के पोषक बनें। मीठे बचन बोलने वाले तथा मधुर व्यवहार करने वाले व्यक्ति को ही समाज में यश प्राप्त होता है। जीवन में ऐश्वर्य और सम्पन्नता के साथ साथ विवेकशीलता भी निरन्तर बढती रहनी चाहिएं। हर सफलता के लिए हम ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का भाव रखें।

" ये भी एक दुआ है खुदा से,
किसी का दिल ना दुखे मेरी वजह से,
सिर्फ खुशियाँ ही मिलें मेरी तरफ से "

❋❋❋

चाणक्य नीति

मणिर्लुण्ठति पढायो कचः शिरसि धार्यते।
क्रयविक्रयवेलायां काचःकाचौ मणिर्मणिः।।

भावार्थ: आचार्य चाणक्य का मत है कि भले ही मणि को ठोकर मारी जाए और कांच को मस्तक पर धारण किया जाये, परन्तु क्रय–विक्रय के समय मणि का मूल्य और होता है तथा शीशे या पत्थर की कीमत और। तात्पर्य यह है कि किसी ज्ञानी योग्य व्यक्ति की निम्न स्थान पर और अयोग्य व्यक्ति को उच्च पद रख देने से उनकी कीमत या मूल्य में से किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हो जाता, अपितु उससे गलत स्थान पर रखने वाले व्यक्ति की ही निन्दा होती है। रत्न, रत्न ही रहेगा और कांच, कांच। स्थान का परिवर्तन यानी कांच रत्न के आभूषणों की तरह सजाकर रख दिया जाए तो उसका मूल्य या कीमत बहुत अधिक नहीं हो जाता। जौहरी उसकी असलियत परख ही लेता है। ❋❋❋

Free services offered by us on our website www.bhavishydarshan.in

1. Horoscope Making
2. Match-Making
3. Lal Kitab Predictions
4. Successful Name
5. Baby Names
6. Favourable Gems
7. Panchang
8. Calender
9. Bi-monthly Magzine
10. Daily/Yearly Rashiphal
11. Vastu Remedies
12. Details of Yantra/Mantra

Connect With Us

and get 15% discount*

*valid for a single user

नजर दोष एंव उपाय

श्रीमती पूनम दत्त
आगरा

जिस प्रकार किसी व्यक्ति की राशि एंव नक्षत्र के स्वामी निर्बल होने पर वह नजर दोष के प्रभाव में आ जाता है, उसी प्रकार यदि किसी व्यक्ति की राशि एंव नक्षत्र स्वामी क्रूर ग्रह बली हो तथा पापी ग्रहों का प्रभाव हो तो व्यक्ति की वाणी दृष्टि एंव मनोभावों में ईर्ष्या उत्पन्न होती है। यदि वह किसी को टोक दे या किसी सुंदर वस्तु भवन, वाहन या मशीनरी को लगातार देखता रहे या मन ही मन ईर्ष्या करे तो उस व्यक्ति या वस्तु को नजर दोष लग जाता है।

नजर दोष से पीड़ित व्यक्ति को अपने कक्ष के द्वार पर तीन चमत्कारिक गुटिकाएं लाल धागे में पिरोकर लटका देनी चाहिए। इन्हें ऐसे स्थान पर लटकाना चाहिए कि कक्ष में प्रवेश करते समय बाहरी व्यक्ति की दृष्टि उन पर अवश्य पड़े।

नजर या तंत्र का प्रयोग किया गया हो तो गुटिकाएं चटक जाती है या फट कर स्वंय गिर जाती हैं। ऐसा होने पर दूसरी गुटिकाएं फिर से लटकाएं। इससे व्यक्ति की बहुत सुरक्षा होती है। कार दुर्घटना आदि से बचाव के लिए भी ये गुटिकाएं कार में लगाकर यह प्रयोग कर सकते है।

जिन व्यक्तियों को अक्सर नजर लगती रहती हो, उन्हें कभी भी सफेद मिठाई खाकर घर के बाहर नहीं जाना चाहिए। यदि कोई ऐसी स्थिति हो कि अचानक जाना ही पड़ जाए तो तुलसी के पांच पत्ते जल से सेवन कर लें। सेवन करते वक्त मन ही मन श्री विष्णु बोलते रहे।

निर्माणाधीन भवन को नजर नहीं लगे, इसके लिए भवन के बाहर की दीवार पर राक्षस का मुखौटा लगा दें। गृहस्वामी का फटा हुआ जूता भी घर के सम्मुख बाहर की चारदीवारी पर लटका देना चाहिए। व्यवसायिक स्थल के मुख्य द्वार की चौखट पर काले घोडे की नाल शनिवार शाम को ठोक देने से उसकी नजर दोष से रक्षा होती है।

वर वधू को भी नजर बाधा से बचाने के लिए उनके हाथों में कंगना बांधा जाता है।

सुंदर बागवानी भी नजर दोष से नहीं बच पाती है। ऐसी स्थिति में एक तुलसी का पौधा लगाना चाहिए। सुंदर पौधों की जड़ के समीप काले रंग की कौड़ी रखनी चाहिए। ग्यारह पौधों के समीप एक–एक कौड़ी अवश्य रखनी चाहिए।

महीने में दो तीन बार घर में कपूर अवश्य जलाएं। यह प्रयोग बहुत प्रभावशाली है। बार–बार धन हानि एंव चोरी की घटनाएं होती हों तो तिजोरी में देा कौडियां लाल वस्त्र में बाधंकर शुक्रवार को रखें। जो व्यक्ति आपसे ईर्ष्या करता हो, उसके सामने कुछ खाना पीना नहीं चाहिए अन्यथा खाना हजम नहीं होगा व स्वास्थ्य खराब हो जाएगा।

नजर दोष से बचाव का सबसे कारगर उपाय हनुमान जी की पूजा आराधना हैं। शनिवार को हनुमान जी के मंदिर में जाकर उनके कंधो का सिंदूर लाकर नजर दोष से पीड़ित व्यक्ति के माथे पर लगा दें दोष दूर हो जाएगा। साथ ही हनुमान बाण का पाठ करें– बहुत प्रभावी उपाय है।

हनुमान जी के शरीर का सिंदूर, एक लाल मिर्च, लोहे की एक बड़ी कील और काले उड़द के थोड़े से दाने को सफेद वस्त्र में काले धागे से बाधें और फिर पोटली को बच्चे के पालने के ऊपर बांध दें। न तो किसी की नजर लगेगी न ही पिशाच बाधा सताएगी। हनुमान जी की पूर्ण कृपा बनी रहेगी।

भोजन को यदि नजर लग जाए तो उसका प्रत्येक पदार्थ थोड़ा थोड़ा लेकर एक पत्ते पर रखें और उस पर गुलाल बिखेरें। मन ही मन श्री बजरंगबली बोलते रहें। फिर उसे रास्ते में कहीं रख आएं और फिर आकर सभी के साथ आराम से भोजन करे।

❋❋❋

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर,
कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना
तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा
डॉ. महेश पारासर
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

16 अगस्त - 15 सितम्बर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ– निजीजन से अनबन होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानी लगी रहेंगी। धन लाभ होकर हानि होने का भय रहेगा। अपमान होने का भय रहेगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस माह में वायु विकार होने की संभावना रहेगी। पुत्र को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी। गुप्त शत्रु से बचें।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। यात्रा में कष्ट से बचें। अर्थ लाभ होकर भी हानि का भय रहेगा। मास के अन्त में कुछ परेशानियां उत्पन्न होगी। घरेलू परेशानी लगी रहेंगी।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। व्यवसाय मध्यम रहेगा। अपमान होने का भय रहेगा। कारोबार में रुकावटें आयेंगी। मास के अन्त तक खर्चा अधिक होगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। व्यवसाय ठीक रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– नेत्र रोग का भय रहेगा। शत्रु कमजोर रहेंगे। कारोबार में हानि होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त तक खर्चा अधिक होगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते–इस माह में प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। स्वास्थ्य श्रेष्ठ रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेंगी। परन्तु मास के अन्त मे आपको राज भय रहेगा। यात्रा में कष्ट से बचें।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस माह में स्थान परिर्वतन होने की संभावना रहेगी। कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस माह में स्वास्थ्य खराब रहेगा। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। कारोबार में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। खर्चे अधिक होंगे। नई योजनायें बनायेंगे।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– आर्थिक परेशानियाँ लगी रहेंगी। यात्रा का सुख मिलेगा। गुप्त शत्रु से सावधान रहें। इस माह में उदर विकार संबंधित रोग से पीड़ित होने की संभावना रहेगी। पत्नि को भी शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- आर्थिक लाभ होकर भी हानि भय लगा रहेगा इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। खर्चे अधिक होंगे। नई योजनायें बनायेंगे। घरेलू परेशानी लगी रहेंगी।

मीन(PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- नेत्र रोग का भय रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। ससुराल से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। अपमान होने का भय रहेगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

अगस्त	सितम्बर
16.षष्ठी हलष्ठी, **17.**शीतला सप्तमी,श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त) **18.**श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव) **19.**गोगा नवमी **21.**अजा एकादशी व्रत **22.**प्रदोष व्रत, गौवत्स द्वादशी **25.**अमावस्या व्रत (पोला त्योहार) **28.**हरतालिका तीज व्रत **29.**श्री गणेश चतुर्थी व्रत **30.**ऋषि पंचमी **31.**सूर्य षष्ठी	**2.**राधाष्टमी **3.**हरि जयंती **5.**जल झूलनी एकादशी व्रत, शिक्षक दिवस **6.**प्रदोष व्रत, वामन द्वादशी **8.**अनन्त चतुर्दशी, शिरडी वाले साई बाबा जं., स्वामी शिवानंद जं. **9.**पूर्णिमा श्राद्ध पक्ष प्रारम्भ,पं. गोविन्द बल्लभ पंत जयंती **10.**द्वितिया श्राद्ध **11.**तृतिया श्राद्ध, श्री बिनोबा भावे जयंती **12.**चतुर्थी श्राद्ध **13.** पंचमी श्राद्ध **14.**षष्ठी श्राद्ध, भारतीय हिन्दी दि., **15.**सप्तमी श्राद्ध, भा. इन्जीनियर्स डे

ग्रहारम्भ मुहूर्त

अगस्त – 30 **सितम्बर**– नही है।

गृह प्रवेश मुहूर्त

अगस्त– नही हैं। **सितम्बर**– नही है।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

अगस्त–27, 28, 30

सितम्बर– 4, 6

नामकरण संस्कार मुहूर्त

अगस्त– 20, 28

सितम्बर– 7, 10, 11, 15,

सर्वार्थ सिद्ध योग

अगस्त	सितम्बर
18 ता. प्रातः 11:52 से 19 ता. प्रातः 05:48 तक 20 ता. प्रातः 05:51 से दोपहर 03:41 तक 21 ता. सायं 06:15 से 22 ता. रात्रि 09:04 तक 30 ता. दोपहर 03:47 से 31 ता. प्रातः 05:54 तक	01 ता. सायं 06:01 से 02 ता. प्रातः 05:56 तक 06 ता. दोपहर 11:59 से 07 ता. प्रातः 05:57 तक 11 ता. प्रातः 06:01 से 12 ता. सायं 07:31 तक 15 ता. प्रातः 06:03 से 16 ता. प्रातः 06:00 तक

16 सितम्बर - 15 अक्टूबर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ-इस मास में उदरविकार रोग होने की संभावना रहेगी। निजीजन को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। नौकरी में रुकावटें आयेंगी। घरेलू परेशानियाँ निरंतर रहेगी।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– पुत्री को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगी। फालतू की चिन्ता में डूबे रहेगें। कारोबार में लाभ की प्राप्ति रहेगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस माह में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। इस माह में शत्रु पक्ष कमजोर रहेगा परन्तु गुप्त शत्रु से बचें। मास के अन्त में खर्चे अधिक होंगे।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– नई-नई योजनाओं से आपको हानि प्राप्त होगी। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। सन्तान सुख मिलेगा। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। हानि का भय रहेगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस माह में उदर विकार होने की संभावना रहेगी। धन हानि होने की संभावना रहेगी। मानसिक अशांति बनी रहेगी। गुप्त शत्रु से भय रहेगा। पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो–इस मास में धन लाभ होने की संभावना रहेगी। स्थान परिवर्तन का विचार बनेगा। नौकरी में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। सम्पत्ति का सुख प्राप्त होगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस मास में वायुविकार रोग होने की संभावना रहेगी। पति-पत्नि में वैचारिक मतभेद रहने की संभावना रहेगी। यात्रा का सुख प्राप्त होगा। सन्तान पक्ष अच्छा रहेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू–प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। सन्तानपक्ष से सुख की प्राप्ति होगी। आय से ज्यादा खर्चे होंगे। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- नई योजना से लाभ की प्राप्ति होगी। पत्नि का पूर्ण सुख एवं पत्नि पक्ष से लाभ प्राप्त होगा। स्थानान्तर का विचार होगा। कारोबार या व्यवसाय ठीक चलेगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय रहेगा। बन्धु सुख प्राप्त होगा। नेत्र कष्ट जैसे रोग से ग्रस्त रहेंगे। सन्तान पक्ष से चिन्ताएँ बनी रहेगी। कारोबार में लाभ की प्राप्ति रहेगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- कारोबार में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। आपको अपनी पत्नि से लाभ की प्राप्ति होगी। धन की परेशानी एवं चिन्ता रहेगी। परिवार में तनाव का वातावरण रहेगा। स्थानान्तर का विचार होगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- इस माह में प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। स्वास्थ्य श्रेष्ठ रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेंगी। परन्तु मास के अन्त मे आपको राज भय रहेगा। यात्रा में कष्ट से बचें।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

सितम्बर	अक्टूबर
16.अष्टमी श्राद्ध 17.नवमी श्राद्ध, विश्वकर्मा पूजन 18.दशमी श्राद्ध 19.एकादशी श्राद्ध 20.द्वादशी श्राद्ध 21.प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध 23. चर्तुदशी श्राद्ध 24.अमावस्या श्राद्ध 25.शरदीय नवरात्रा प्रारम्भ, अग्रसेन जयंती 26.द्वितिया नवरात्र 27.श्री गणेश चतुर्थी व्रत, तृतिया नवरात्र, विश्व पर्यटक दिवस 28.चतुर्थ नवरात्र 29.ललिता पंचमी व्रत 30. छठा नवरात्र, बैंक अर्द्ध वार्षिक लेखाबंदी	1.सरस्वती पूजन 2.दुर्गाष्टमी, महात्मा गांधी जयंती, लाल बहादुर शास्त्री जयंती 3.महानवमी, विजयदशमी 6.प्रदोष व्रत 7.शरद पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत 8.काजौगरी व्रत, कार्तिक स्नान प्रारम्भ, श्री वाल्मीकि जयंती भारतीय वायु सेना दिवस 11.करवाचौथ व्रत 15.अहोई अष्टमी

ग्रहारम्भ मुहूर्त

सितम्बर– नही है।
अक्टूबर– नही है।

गृह प्रवेश मुहूर्त

सितम्बर– नही है। **अक्टूबर** – नही है।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

सितम्बर– 26, 27, 29
अक्टूबर– 1, 5, 8, 9,

नामकरण संस्कार मुहूर्त

सितम्बर– 18, 19, 24, 26
अक्टूबर – 6, 8, 10,

सर्वार्थ सिद्ध योग

सितम्बर	अक्टूबर
18 ता. प्रातः 06:04 से रात्रि 03:24 तक	03 ता. रात्रि 08:15 से 04 ता. प्रातः 8:17 तक
24 ता. सायं 05:31 से 25 ता. प्रातः 06:04 तक	07 ता. प्रातः 11:20 से 08 ता. प्रातः 06:11 तक
27 ता. प्रातः 06:08 से रात्रि 10:41 तक	09 ता. प्रातः 06:14 से 10 ता. प्रातः 5:47 तक
29 ता. प्रातः 06:09 से रात्रि 11:53 तक	13 ता. प्रातः 06:16 से 14 ता. प्रातः 06:24 तक

मौके का फायदा

(मामा की कलम से)

विजय शर्मा
आगरा

एक बाग में मन्दविष नाम का एक सांप रहता था। वह बूढ़ा हो चुका था। निर्बल होने के कारण अपना भोजन भी ढूंढ पाने में असमर्थ था।

एक दिन मन्दविष नदी के किनारे सुस्त व शान्त पड़ा था। उसे एक मेढ़क ने देख लिया। कुछ विचार कर उसने दूर से ही पूछा क्या बात है, आज अपना भोजन नही ढूंढ रहे हो?

भाई! तुम अपना काम करो। मुझ भाग्यहीन के विषय में पूछकर क्या करोंगें? सांप ने कहा। सांप की बात सुनकर मेढ़क की उत्सुकता बढ़ी तो वह आग्रह करते हुए बोला, नही भाई! तुम्हें सब कुछ बताना ही पड़ेगा।

मेंढक ने सांप से जिद की। वह उसके दिल की बात को सुनने की चेष्टा में बार बार कहने लगा भाई आज तो आपको बताना ही होगा कि आप इस तरह से परेशान, सुस्त से क्यों इस नदी के किनारे पड़े हो। श्रीमान अपने मन की बात कह देने से मन हल्का हो जाता है। इसलिए मैं कहता हूँ कि आप मुझे अपने मन की बात बताकर अपना मन हल्का कर लीजिए।

तब सांप ने कहा मित्र! ब्रह्मपुर के निवासी कौडिन्य नाम के वेदपाठी के सब गुणों से युक्त बीस वर्ष के पुत्र को दुर्भाग्य और दुष्ट स्वभाव के कारण जो डस लिया है।

तब उस वेदपाठी ने अपने पुत्र को मरा हुआ देखा तो मुर्च्छित होकर गिर पड़ा, फिर सभी ब्रह्मपुरवासी वहां जमा हो गए। कहा भी गया है कि जो उत्सव, दुख, युद्ध, अकाल, राष्ट्र में उपद्रव होने पर, कचहरी और श्मशान में जो साथ रहता है वही सच्चा बन्धु है।

वहां पर एक कपिल नाम का भिक्षुक भी था। उसने कहा, अरे कौडिन्य। तुम मूर्ख हो इसलिए विलाप करते हो। बालक उत्पन्न होता है तो धाय की तरह नश्वरता की गोद में वह सबसे पहले जाता है, उसके बाद ही माता उसे ग्रहण करती है। जब हम सब नश्वर ही हैं। तो रोना धोना किसके लिए?

सोचो तो–सेना, पराक्रम और हाथी–घोडों के स्वामी कितने राजा हुए हैं। कहां है वे लोग? वह उसे शान्त बना देना चाहता था– उनके वियोग की साक्षी देने वाली पृथ्वी आज भी विद्यमान है। शरीर के संग नाश है, सम्पतियों के साथ विपत्तियां है, समागम के साथ वियोग है और सब उत्पन्न होने वाली वस्तुएं नाश होने वाली हैं।

यह शरीर क्षण क्षण घटता हुआ भी नही दिखता है। जैसे जल के भीतर रखा हुआ कच्चा घड़ा जल से खाली हो जाता है तब पता चलता है मृत्यु दिन प्रतिदिन प्राणी के समीप आती रहती है वैसे ही जैसे फांसी की कोठरी को जाते समय आदमी का एक एक कदम मृत्यु की तरफ बढ़ रहा होता है।

यह यौवन, धन दौलत, ऐश्वर्य और प्रियजनों से भेंट आदि सब नश्वर हैं। समझदार लोग झूठे बन्धनों में स्वंय को नहीं जकडते।

जैसे समुद्र में दो लकड़ी के लट्ठे अपने आप बहते हुए चले जाते है और मिलकर फिर अलग हो जाते हैं। इसी तरह प्राणियों का स्त्री पुत्र, मित्र आदि से मिलन व विनयोग होता है। जैसे कोई मुसाफिर मार्ग में वृक्ष की छाया का आसरा लेकर बैठ जाता है और आराम करके फिर चला जाता है वैसे ही प्राणियों का समागम है।

यह शरीर पांच तत्वों का बना है और पांच तत्वों में ही जा मिलता है। तब मर जाने पर शोक कैसा? प्राणी प्रिय सम्बन्धों मे स्नेह की गांठे जितनी मजबूत करता है उतनी ही हद्रय में शोक की कुठारें खाता है।

जब प्राणी का अपना शरीर भी एक न एक दिन साथ छोड़ देता है तो फिर दूसरों की क्या आशा करनी।

जैसे जन्म आने वाली मृत्यु की सूचना देता है। वैसे ही होने वाला संयोग भी वियोग की सूचना देता है।

जैसे अपच्य भोजन ऊपर से देखने पर सुन्दर स्वादिष्ट लगता है, किन्तु उसका असर भयंकर होता है, वैसे ही प्रियजनों से मेल जोल में सुख तो बहुत प्रतीत होता है, लेकिन विनयोग होने पर उसका फल भी बहुत दुखदायी होता है। जिस तरह आगे निकलती

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. 10039621088, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

हुई जलधारा वापिस नहीं लौटती है वैसे ही रात और दिन प्राणियों की आयु के प्रति क्षण कम करते जाते है।

संसार में सज्जनों का संग अत्यन्त सुख देने वाला है, परन्तु उस संयोग के अंत में वियोग दुख दायक होता है। इसिलिए विवेकी सज्जनों से अधिक मेल जोल नहीं रखतें क्योंकि उनके वियोग की तलवार से कटे हुए हद्रय के घाव की कोई दवा नहीं है।

इतिहास गवाह है कि प्राणियों के साथ उनके पुण्य कर्मो को भी काल खा जाता है। कहने का तात्पर्य यही है कि कर्ता और कर्म दोनों का नाश हो जाता है।

बुद्धिमान लेाग जानते हैं जीवन का कठोर दण्ड मृत्यु के रूप में भोगना ही है। इसलिए वे संसार से अपना मन नहीं जोडते, क्योंकि परिश्रम से बनाए गए रिश्ते बरसात में भीगे चमडें के बन्धन की तरह ढ़ीले पड़ जाते है।

प्राणी जिस समय गर्भ में आता है उसी समय से निरन्तर मृत्यु की ओर बढ़ता रहता है। इसलिए मैं कहता हूं कि संसार की नश्वरता को आंखें खोलकर देखों।

किसी के मरने पर शोक अज्ञान का पाखण्ड है।

सुनो! यदि शोक का कारण अज्ञान नहीं बल्कि वियोग से शोक होना मान लें, तब कुछ दिन बाद शोक और बढ़ना चाहिए, पर कुछ दिनों बाद बढ़ने की अपेक्षा घटता जाता है। अतः स्पष्ट है कि वियोग से नहीं, अज्ञान से शोक होता है यह सब विचार कर आत्मा को स्थिर करके शोक से मुक्त हो जाओं।

कुछ समय से गिरने से उत्पन्न हुए शरीर के मर्मस्थल को विदारण करने वाले कठोर दुःख के प्रहारों की चिन्ता न करना ही सबसे बड़ी औषधि है।

वेदपाठी के वचनों को सुनकर कौडिन्य बोला, अब इस नरक समान घर में रहकर मैं क्या करूंगा। अब मैं जंगल में जाता हूँ।

उसकी बात सुनकर वेदपाठी को कपिल ने समझाते हुए कहा, जिनके मन से मोह माया नहीं गई उन्हें वन में भी चैन नहीं। पांचों इन्द्रियों पर घर में ही संयम रख लो तो बड़ा तप है जिसने माया मोह को छोड़ दिया उसके लिए घर ही सबसे बड़ा तपोवन है।

मनुष्य किसी भी आश्रम में रहे, उसे चाहिए कि दुःख उठाकर भी मनुष्य धर्म न छोड़े। सब प्राणियों में समान भाव रखें, किसी को अपना पराया न समझे।

धार्मिक बनने के लिए भगवे वस्त्र पहनने और जटाएँ बढाने की आवश्यकता नहीं हैं। जो मात्र जीवन के लिए पेट भरते है, सन्तान के लिए गृहस्थी बनते हैं, सत्य बोलने के लिए वाणी का प्रयोग करते है, वे शोक संकट से मुक्त रहते हैं।

अपनी आत्मा को नदी समझो। इन्द्रियों पर संयम ही तीर्थस्थान समझों। सत्य जल है और शील स्वभाव इसका तट है, दया ही लहरें है।

युधिष्ठिर को भी समझाते हुए यही कहा गया था– हे पाण्डु पुत्र! आत्मा रूपी नदी में स्नान करो, तभी अन्तर्रात्मा पवित्र होगी। यह केवल नदियों के जल में पवित्र नहीं होती।

विशेष बात ध्यान में रखने की यह है कि जन्म, बुढापा, रोग और शोक से भरे संसार को छोड़ देने में ही सुख है। संसार में दुख ही दुख है, सुख नहीं। दुख से पीडित मनुष्य के दुख दूर होने पर ही वह सुखी कहलाता है। **शेष अगले क्रमांक में.** ❋❋❋

शेष पेज 7 से आगे.....

इस व्रत में पहले दिन मध्याह्न में हविष्यान्न का एक भुक्त व्रत करके एकादशी को प्रातः स्नानादि के अनन्तर मम समस्त दुरितक्षयपूर्वक श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थ श्रावण शुक्लैकादशीव्रतमहं करिष्ये। यह संकल्प करके भक्तिभाव और विधान सहित भगवान् केशव का पूजन करे और अनेक प्रकार के फल पत्र पुष्प और नैवेद्य अर्पण करके नीराजन करे। दूसरे दिन यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराकर पारणा करके स्वंय भोजन करें तो निश्चय ही कल्याण होता है।

अजा एकादशी व्रत

अजा एकादशी महान् पुण्यफल को देने वाली है। यह एकादशी भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष में होती है। बालक वृद्ध, स्त्री पुरूष एंव श्रेष्ठ मुनियों को भी इसका अनुष्ठान करना चाहिए। इस तिथि के सेवन से मनुष्य कायिक, वाचिक और मानसिक पाप से मुक्त हो जाता है। व्रत करने वाला वैष्णव पुरूष दशमी तिथि को काँस, उडद, मसूर, चना, कोदों शाक, मधु, दूसरे का अन्न, दो बार भोजन तथा मैथुन इन दस वस्तुओं का परित्याग कर दे। एकादशी को जुआ खेलना, नींद लेना, पान खाना, दाँतुन करना, दूसरे की निन्दा करना, चुगली खाना, चोरी, हिंसा, मैथुन, क्रोध तथा असत्य भाषण को त्याग दे। दैनिक कृत्यों को पूर्ण कर एकादशी व्रत का विधिवत् संकल्प लेकर नियमानुसार व्रत का पालन करें। द्वादशी को व्रत पूर्ण करें।

एक समय प्रसन्न मुद्रा में धर्मराज युधिष्ठिर ने श्री कृष्ण भगवान् के श्री चरणों में प्रणाम कर पूछा जनार्दन, नन्द नन्दन, गोपिकाबल्लभ, अखिलेश्वर भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का माहात्म्य बतलाने की कृपा करें।

भगवान श्री कृष्ण बोले– राजन्! एकाग्रचित होकर सुनो। भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम अजा है, वह सब पापों का नाश करने वाली बतायी गयी है। जो भगवान् हषीकेश का पूजन करके इसका व्रत करता है, उसके सारे पाप नष्ट हो जाते है। पूर्वकाल में हरिश्चन्द्र नामक एक विख्यात चक्रवर्ती राजा हो गये हैं जो समस्त भूमण्डल के स्वामी और सत्यप्रतिज्ञ थे। एक समय किसी कर्म का फलभोग प्राप्त होने पर उन्हें राज्य से भ्रष्ट होना पड़ा। राजा ने अपनी पत्नी और पुत्र को बेचा। फिर अपने आप को भी बेच दिया। पुण्यात्मा होते हुए भी उन्हे चाण्डाल की दासता करनी पड़ी। वे मुर्दे का कफन लिया करते थे। इतने पर भी नृपश्रेष्ठ हरिश्चन्द्र सत्य से विचलित नहीं हुए। इस प्रकार चाण्डाल की दासता के करते उनके अनेक वर्ष व्यतीत हो गये। इससे राजा को बड़ी चिन्ता हुई। वे अत्यन्त दुःखी होकर सोचने लगे–क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? कैसे मेरा उद्धार होगा? इस प्रकार चिन्ता करते करते वे शोक के समुद्र में डूब गये। राजा को आतुर जान कर कोई मुनि उनके पास आये, वे महर्षि गौतम थे। श्रेष्ठ ब्राह्मण को आया देख नृपश्रेष्ठ ने उनके चरणों में प्रणाम किया और दोनों हाथ जोड़ गौतम के सामने खड़े होकर अपना सारा दुखमय समाचार कह सुनाया।

राजा की बात सुनकर गौतम ने कहा राजन्! भादों के कृष्ण पक्ष में अत्यन्त कल्याणकरी अजा नाम की एकादशी आ रही है, जो पुण्य प्रदान करने वाली है। इसका व्रत करों। इससे पाप का

अन्त होगा। तुम्हारे भाग्य से आज के सातवें दिन एकादशी है। उस दिन उपवास करके रात में जागरण करना।

ऐसा कहकर महर्षि गौतम अन्तर्धान हो गये। मुनि की बात सुनकर राजा हरिश्चन्द्र ने उत्तम व्रत का अनुष्ठान किया। उस व्रत के प्रभाव से राजा सारे दुःखो से पार हो गये। उन्हें पत्नी का सन्निधान और पुत्र का जीवन मिल गया। आकाश में दुन्दुभियाँ बज उठीं। देवलोक से फूलों की वर्षा होने लगी। एकादशी के प्रभाव से राजा ने अकण्टक राज्य प्राप्त किया और अन्त में वे पुरजन तथा परिजनों के साथ स्वर्गलोक को प्राप्त हो गये। राजा युधिष्ठिर! जो मनुष्य ऐसा व्रत करते है, वे सब पापों से मुक्त हो स्वर्गलोक में जाते हैं इसके पढ़ने और सुनने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। ❋❋❋

शेष पेज 4 से आगे.....

और अष्टम भाव पर दृष्टि रहेगी। कर्क का गुरू आपके लिये मध्यम फलदायी रहेगा। अकारण एंव अनावश्यक खर्च होगा। विशेषकर माता, मकान, वाहन आदि पर। संतान से परेशानी, विद्या अध्ययन में असफलता, भटकाव आदि। व्यापार की दृष्टि से भी यह समय उचित नहीं कहा जा सकता है। बार–बार धन हानि, धोखा, व्यापार मे पैसा अनावश्यक रूप से फॅस जायेगा। रोग एंव शत्रु कदम कदम पर अहित करेंगें। पत्नी एंव संतान के सामान्य न रहने से गृहस्थ सुख में भी न्यूनता रहेगी। आपको शनि की ढ़ैया भी चल रही है जो 23 जुलाई को संयम, धैर्य एंव सावधानी रखने का है। गुरूवार का व्रत, गुरू बीज मंत्र जाप करना हितकर रहेगा।

कन्या– आपकी राशि से एकादश भाव अर्थात् लाभ स्थान में बृहस्पति का प्रवेश हुआ है। इस परिवर्तन से पराक्रम भाव, संतान भाव एंव गृहस्थ भाव पर दृष्टि रहेगी। कन्या राशि वालों के लिये यह समय उत्तम फलदायक रहेगा। विद्यार्थियों के लिये विशेष अनुकूल अगर आप प्रतियोगी, प्रशासन सेवा सम्बधित परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं तो आशानुकूल परिणाम मिलेगें। व्यापार में आशा से अधिक सफलता, दिया हुआ, रूका हुआ पैसा सहज ही प्राप्त होगा। नया व्यापार करने के लिये उत्तम समय है। यश, मान, प्रतिष्ठा बढेगी, संतान एंव पत्नी के पूर्ण सहयोग से गृहस्थ जीवन का भरपूर सुख प्राप्त करेंगें।

तुला– आपकी राशि से कर्म भाव में बृहस्पति का प्रवेश हुआ है। इस परिवर्तन से धन भाव, सुख भाव एंव रोग भाव प्रभावित होगें। तुला राशि के जातको को बृहस्पति सामान्य फल प्रदान करेंगा। चिन्ता, तनाव, व्यर्थ की भाग दौड़ हर क्षेत्र मे मिले जुले, फल प्राप्त होगें। जहाँ व्यापार मे खूब सफल होगें, वहीं रूका हुआ पैसा, उधार दिया हुआ रूपया पुनः प्राप्त कर सकेंगे। कुटुम्ब जनों से मेल मिलाप, मधुर सम्बन्धों में बढ़ोतरी होगी। इस समय विशेष उद्देश्य को लेकर की गई यात्रा भाग्योदय में सहायक होगी। विद्यार्थी वर्ग का शिक्षा के प्रति रूझान कम होकर शिक्षा से बार बार मन उचाट होगा। पुराने रोग एंव शत्रु फिर से परेशान करेंगे। शनि भी सुख सुविधा बढ़ाने में सहायक रहेगा। आय का यथेष्ठ भाग परिवारी जनों के उपचार, रोग निवृत्ति पर खर्च करना पडेगा।

वृश्चिक– आपकी राशि से भाग्य स्थान में बृहस्पति का प्रवेश हुआ है। इस परिवर्तन से लग्न, पराक्रम एंव सतांन भाव, शिक्षा भाव प्रभावित होंगे। वृश्चिक राशि वाले जातक अपने आपको सर्वाधिक भाग्यशाली मानेगें। विशेषकर विद्यार्थी वर्ग के लिये सुनहरा अवसर है, प्रतियोगी परीक्षाएँ, प्रशासनिक सेवा के लिये किया गया श्रम अवश्य शुभफल देगा। पराक्रम, प्रतिष्ठा, मान, बढेगा, वहीं सरकारी कर्मचारियों के लिये प्रमोशन धन लाभ के आसार बनेंगे। व्यापारी वर्ग जहाँ अच्छी धन सम्पति जुटा पायेंगे साथ ही नये–नये कार्यो की रूप रेखा बनायेंगें। वर्तमान व्यापार को आप निश्चित रूप से विस्तार देंगे। सम्पति क्रय के लिये श्रेष्ठ समय है। संतान से सुख प्राप्त होगा। पुत्र रत्न की प्राप्ति भी संभव। राहु एंव शनि भी उद्देश्यों की पूर्ति के लिये सहायक है। इतने पर भी यह ध्यान रखें कि आपको शनि की ढ़ैया लग रही है।

धनु– आपकी राशि से अष्टम् भाव में बृहस्पति का प्रवेश हुआ है। इस परिवर्तन से द्वादश भाव, धन भाव एंव सुख भाव प्रभावित होंगे। धनु राशि वालों के लिये अष्टम गुरू मिला जुला फल देगा। स्वास्थ्य को लेकर बार बार परेशानी के साथ, उदर रोग, वायु विकार, चर्म रोग स्नायु निर्बलता जैसे रोग घेरे रहेंगे। आय की अपेक्षा व्यय अधिक होगा। अनावश्यक खर्च अधिकाधिक होने से तनाव ग्रस्त रहेंगें। बनते कार्य में रूकावट, कुटुम्ब एंव परिवार में कलह अपने प्रिय जन से सम्बध बिगड़ेगे। हाँ, विद्यार्थी वर्ग अपने उद्देश्य में पूर्ण तया सफल रहेंगे। नये कार्य में हाथ डालना उचित नहीं रहेगा। आपको गुरूवार व्रत बृहस्पति के बीज मंत्र का जाप लाभप्रद रहेगा।

मकर– आपकी राशि से सप्तम भाव् में बृहस्पति का प्रवेश हुआ है। इस परिवर्तन से एकादश भाव, पराक्रम भाव, एंव लग्न भाव प्रभावित होंगे। मकर राशि वालों के लिए विशेष अनुकूल रहेगा कर्क का बृहस्पति। आप निश्चित रूप से आर्थिक मामलों में लाभ प्राप्त कर संकेंगे। धन धान्य, ऐश्वर्य, मान सम्मान तथा पराक्रम की वृद्धि होगी। व्यापारी वर्ग कार्य की नई रूपरेखा बनायेंगे। नये–नये व्यापारिक सम्पर्क साझेदारी व्यापार के आफॅर मिलेगे। रूका हुआ पैसा, उधार दिया हुआ रूपया वसूल होगा। भूमि, भवन, वाहन इत्यादि पर खर्च करना पड़ेगा। विद्यार्थी वर्ग विशेष सफलता पायेंगे। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यापारिक यात्रा से विशेष सफलता पायेंगे। समाज में प्रतिष्ठा बढेगी। स्थान हानि करों जीव के आधार पर पत्नी सामान्यतया रोग ग्रस्त रहेगी। समय श्रेष्ठ है सदुपयोग करें।

कुंभ– आपकी राशि से रोग स्थान में बृहस्पति का प्रवेश हुआ है। इस परिवर्तन से कर्म, हानि एंव कुटुम्ब क्षेत्र प्रभावित होंगे। मकर राशि के जातकों के लिये यह समय परेशानी, उलझनों भरा रहेगा। रोग, शोक तथा धन के दुरूपयोग तथा क्षति का रहेगा। बृहस्पति अन्जाने रोग दे, तो आश्चर्य नही होगा। गोचर वशात राहु शनि मंगल की प्रतिकूलता से भी गृह कलह पति पत्नि में वैचारिक मतभेद विरोधाभास एंव कटुता उत्पन्न होगी। विद्यार्थी वर्ग के लिये समय अनुकूल नहीं कहा जा सकता है। शिक्षा के प्रति अरूचि बढ़ेगी। व्यापारी वर्ग को आवश्कता से अधिक सावधानी रखकर व्यापार करना होगा। नये कार्य में हाथ डालना उचित नहीं होगा। यह मान कर चलें की भाग्य आप से वाम मार्गी है कुछ उल्टे सीधे निर्णय लेकर पश्चाताप करना पडेगा। गुरू के उपाय राहत दे सकते हैं।

मीन– आपकी राशि में पंचम भाव अर्थात् शिक्षा एंव सन्तान स्थान में बृहस्पति का प्रवेश हुआ है। इस परिवर्तन से भाग्य लाभ एंव संतान क्षेत्र प्रभावित रहेंगे। मीन राशि वाले जातकों के लिये कर्क का बृहस्पति अत्यन्त शुभ फलदायी रहेगा। भाग्य आपका विशेष रूप से साथ देगा। व्यापार में लाभ के नये नये आयाम बनायेंगे। आय में अचानक तेजी से आप भी अंचभित रह जायेगे। नये नये व्यापारिक रिश्ते कायम होगे। उच्च स्तरीय वाहन की प्राप्ति संभव है। व्यापारिक यात्राएं यथेष्ट लाभ दिलायेगी। लम्बे समय से रूका हुआ कार्य अचानक ही पूर्ण हो जाये, तो आश्चर्य नहीं। पुत्र रत्न की प्राप्ति खोयी हुई प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त कर सम्मानित होंगे। आय का यथेष्ठ भाग मांगलिक एंव शुभ कार्य मे खर्च करेंगे। धार्मिक अनुष्ठान यज्ञादि में पूर्ण रूचि लेगे। अन्य ग्रहों की अनुकूलता से धन, लाभ, मान सम्मान, प्रतिष्ठा, पराक्रम बढेगा। गृहस्थ सुख में पूर्णता रहेगी। इतने पर भी यह ध्यान रखें कि आपको शनि की ढ़ेया आरम्भ हो रही है।

अगर आप गुरू के दुष्प्रभाव से पीडित हैं तो निवारण उपाय कर अनुकूलता पा सकते है।

❋❋❋

शेष पेज 05 से आगे .....

(108) वार जाप करें। उपरोक्त विधि का पालन करने से भी धीरे–धीरे शत्रुओं का स्तभंन होता है। मुकदमें आदि में विजय प्राप्ति होती है व शत्रु परास्त होते चले जाते है।

विभिन्न प्रकार की सामग्री से हवन के फल

1. **यथेच्छा धन प्राप्ति हेतु–** दूध मिश्रित तिल एंव चावल द्वारा 10 हजार बार हवन करने से धन प्राप्ति होती है।
2. **कारागर से बंदी की मुक्ति–** गुग्गुल और तिल द्वारा 10 हजार बार हवन करने से कैदी कारागर से छूट जाता है।
3. **शत्रु पर विजय पाने हेतु–** सेमर के फलो के हवन से शत्रु पर विजय प्राप्त होती है।
4. **रोग शान्ति हेतु–** 4 अंगुल की रेडी की लकडियाँ, कुम्हार की चाक की मिट्टी तथा शहद घी बूरा तथा खील मिलाकर हवन करने से सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति मिलती है।
5. **वशीकरण हेतु–** पीली सरसों के हवन से वशीकरण होता है। सब वश में हो जाते है।
6. **आकर्षण हेतु–** शहद घी शक्कर के साथ नमक से हवन करने पर आकर्षण होता है।
7. **कलह–** तेल से मिले हुये नीम की पत्ती से होम करने पर आपस में झगड़ा होता है।
8. **शत्रु स्तंभन–** ताड़ पत्र नंमकयुक्त हल्दी की गांठ से हवन करने पर शत्रु से स्तंभनत होता है। राई, भैंस का घी व गुग्गल का हवन रात्रि में करने से शीघ्र ही शत्रुओं का नाश होता है।
9. **संतान सुख–** मूल यंत्र का 4 लाख जप करके दशांश हवन अशोक व कुबेर के पत्तों द्वारा करने से सन्तान सुख प्राप्त होता है।

ऊँ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुख पदं स्तम्भ
जिह्वा कीलय बुद्धिं विनाश्य ह्लीं ऊं स्वाहा।

❋❋❋

शेष पेज 9 से आगे.....

चला जाता है तो उसकी विशिष्टता भी सुप्त या लुप्तप्राय हो जाती है।

आकाश में स्थित ज्योर्तिपिण्डों के संचार और उनसे बनने वाले प्रभाव के विश्लेषण करने वाली विद्या का नाम ज्योतिष शास्त्र है।

ज्योतिष का इतिहासः वेद के 6 अंग–शिक्षा, कल्प, निरूक्त व्याकरण, छन्द और ज्योतिष है। वेद अपौरूषेय इसलिये ज्योतिष जो कि वेदांग है वह भी अपौरूषेय है अर्थात सृष्टि के आदि से चला आ रहा है। काल क्रम से ज्योतिष शास्त्र के 18 प्रणेता माने गये है।

यथा सूर्यः पितामहो व्यासो वशिष्ठोऽत्रिपराशरः
कश्यपों नारदो गर्गो मरीचिर्भनुरंगिराः
लोमशो पौलिशश्चैव च्यवनो यवनोभृगुः
शौनकोऽष्ठदश होते ज्योतिशास्त्र प्रर्वतकाः

ज्योतिष शास्त्र के उक्त 18 प्रणेताओं के अतिरिक्त ज्योतिष की अपने शोधो और व्याख्या के द्वारा अभिवृद्धि करने वाले विद्वानों की एक लम्बी श्रंखला है। ज्योतिष के प्रवर्तक ऋषियों के अनेक ग्रंथ यवनों के आक्रमणों मे नष्ट हो गये तथा बहुत से लुप्त हो गये है। फिर भी ज्योतिष की अमूल्य साम्रगी और अप्रकाशित रूप में सभी देशों में विद्यमान है।

ज्योतिष ऋषि आत्माओं का पुण्य प्रसाद है। इसका सदुपयोग करने वालों को चाहिए कि अपने भाव, विचार और प्रयासों को ऋषि अनुशासन के अनुरूप ढालने का प्रयास करें तभी इस विद्या के साथ समुचित न्याय किया जा सकेगा। दैवज्ञ को देवोपासक, सदाचारी प्रलोभनवृति का त्याग करने वाला तो होना ही चाहिए। तभी सावक दैवज्ञ जिज्ञासु का समाधान भली भाँति कर सकेंगे। फलित के निष्कर्ष इस ढंग से प्रस्तुत किये जाऐं कि व्यक्ति का मनोबल या पुरूषार्थ उससे मन्द या कुन्द न हो बल्कि उसको विकसित, दिशाबद्ध एंव प्रभावी बनाया जा सके। अन्तर्ग्रही प्रवाह विभिन्न ऋतुओं की तरह अपना प्रभाव प्रकट करते रहते हैं। उनके प्रभावों से बचने और अनुकूल प्रभावों का सदुपयोग निश्चित रूप से किया जा सकता है। ज्योतिष शास्त्र अन्तः ज्योति को परम ज्योति के अनूकुल प्रभावों से पुष्ट एंव समर्थ बनाने के लिए अपनी स्वाभाविक भूमिका निभाए, ऐसे ही प्रयास किये जाने चाहिए। ❋❋❋

शेष पेज 8 से आगे.....

पढ़ने वाले बच्चों को ब्राहाणों के पैर छूकर आर्शीवाद लेना चाहिये। इससे गुरू ग्रह मजबूत होता है व शिक्षा में बच्चों को अच्छे परिणाम प्राप्त होते है।

पढ़ाई के कमरे में प्रातः सूर्य की किरणों का प्रवेश अत्यन्त आवश्यक है। इसलिये सुबह उठते ही बच्चों के कमरे के दरवाजे व खिडकियाँ खोल देनी चाहिये।

प्रातः सर्वप्रथम केसर का सेवन करने से भी गुरू ग्रह मजबूत होता है जिससे बच्चों का मन पढ़ाई में लगने लगता है।

आशा है उपरोक्त उपायों का पालन करके आप अपने बच्चों की शिक्षा में मदद कर सकते हैं। इससे आपके बच्चों की पढ़ाई का स्तर अवश्य ऊँचा उठेगा एवं उनका मन अधिक एकाग्र हो जायेगा। ❋❋❋

इंटीरियर से जानें व्यक्तित्व

इंसान अपने घर को बेहतरीन बनाने के लिए सब कुछ करता है। सजावट से लेकर रंग और फर्नीचर तक, हर पल घर को यूनिक बनाने की कवायद चलती रहती है। लेकिन कम ही लोग जानते है कि घर की सजावट हमारे व्यक्तिव की कहानी खुद बयां कर देती है। जिस तरह बच्चों का कमरा उनके खेल खिलौने, यंगस्टर्स का कमरा, म्यूजिक सिस्टम और कंप्यूटर से खुद पहचान में आ जाता है, ठीक उसी प्रकार घर का इंटीरियर हमारे व्यक्तिव की पोल खोल देता है।

बर्हिमुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति कमरे की खिड़कियां खुली रखना पसंद करते है। घर के फर्नीचर व दीवारों का रंग भी ब्राइट पसंद करते हैं। ऐसे लोग कुर्सियों को खिडकी की दिशा में रखना पसंद करते हैं ताकि बाहर का नजारा दिखाई दे।

अंतर्मुखी व्यक्तित्व वाले इंसान घर की खिडकियां बंद या अधखुली रखना पसंद करते हैं। रंगों का चयन करते समय खुद से ज्यादा दूसरों की पसंद का ध्यान रखते हैं।

क्या कहते हैं रंग : आप अपने घर के लिए कौन से रंग का चुनाव करते हैं। इससे भी आपके व्यक्तित्व, पसंद और नापसंद का पता चलता है।

लाल– लाल रंग पसंद करने वाले हमेशा आकर्षण का केंद्र बने रहना पंसद करते हैं। प्यार का इजहार करते वक्त भी दिखावे और नाटकीयता में विश्वास करते हैं।

पीला और नारंगी– ऐसे लोग जीवन में संतुलन बनाए रखना पसंद करते है। किचन के लिए आरेंज कलर पसंद करने वाले खाने के शौकीन होते है।

हरा– हरा रंग शांति का प्रतीक है। अगर आपको हरा रंग अच्छा लगता है तो आप सुकून की तलाश में है। तनाव से दूर आप हरी–भरी वादियों में घूमना पसंद करते हैं।

नीला– नीला रंग ताजगी और सादगी का पारिचायक है। नीला रंग पसंद करने वाले स्वभाव से नम्र और विचारों से ओत प्रोत शैली पसंद करते है।

क्रीम– यह रंग ठंडा होता है। इसका चुनाव करने वाले व्यक्ति शांत व नियमबद्ध जीवन जीना पसंद करते है। घर की साज–सज्जा का तरीका भी जाहिर करता है। आप किस श्रेणी का जीवन जीना पसंद करते है।

आराम पसंद– आपको घर में सबकुछ रिलैक्स और आसानी से इस्तेमाल होने वाला चाहिए। तो आप बहिर्मुखी व्यक्तित्व के साथ सामाजिक भी हैं। ऐसे घर में खुशहाल लोग रहते है। मेहमान भी आपके घर में सहज महसूस करते है।

एक ही ढ़र्रे पर रहने वाले– आप अपनी नापसंद को लेकर तटस्थ हैं। ऐसे लोग घर को पारंपरिक तरीके से सजाना पसंद करते हैं। एंटीक आयटम संभालकर रखते हैं। प्रैक्टिकल के विपरीत अपने ढर्रे से जीवन जीना पसंद करते है।

सुकून पसंद– आपका घर तनाव और बाहरी शोर शराबे से बिल्कुल अलग है। बाहरी टेंशन घर में न आए इसके लिए हल्के रंग के पेंट और फर्नीचर का प्रयोग करते है। ताकि बाहरी टेंशन से रिलैक्स फील कर सकें।

टेंड मेकर– अपनी व्यक्तिगत जिंदगी की तरह अपने घर के लिए भी हमेशा कुछ खास कुछ नये की तलाश में होते है घर का हर कमरा खास होता है जिसमें नये जमाने की सारी चीज मौजूद रहती है। ❋❋❋

हमारे यहाँ रत्नों को लैब से टेस्टेड (Lab Certified) कराकर उपलब्ध कराये जाते हैं। रत्नों की 100% शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफिकेट दिया जाता है।

मेवाड़ विश्वविद्यालय व अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ
के संयुक्त तत्वाधान में
ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समीति, आगरा
के अंतर्गत करें
4 वर्षीय इंटिग्रेटेड पोस्ट ग्रेजुएशन एवं पीएच. डी.
आवश्यक शैक्षणिक योग्यता - स्नातक (ग्रेजुएशन)
अथवा स्नातकोत्तर (पोस्ट ग्रेजुएशन)

देय राशि	₹ 75000/- प्रति वर्ष
विवरण पत्रिका	₹ 500/-
प्रवेश परीक्षा शुल्क	₹ 1000/-

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष एवं वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा। मो. 9557775262, 9719666777

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।
500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262